हिंदी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय
हिंदी का स्नातकोत्तर पाठयक्रम

प्रस्तावना (Preamble)

- हिंदी का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम न केवल हिंदी प्रदेश बल्कि हिंदीतर प्रदेश के हिंदी से जुड़े हुए स्नातक विद्यार्थियों की शैक्षणिक मांग की पूर्ति एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य को प्रस्तुत करता है।
- प्रस्तुत पाठ्यक्रम यूजीसी के विश्वविद्यालयी मानकों पर आधारित है, विश्वद्यालय के अकादमिक परिषद (Academic Council) से पारित है तथा अंतर-अनुशासनिक (CBCS) विषयों से भी संबंधित है।
- यह पाठ्यक्रम द्विवर्षीय है जो चार सत्रों में विभक्त है| प्रथम तीन सत्र अनिवार्य-पत्र (Core Course) के रूप में है, जिसके अंतर्गत हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य, भाषा विज्ञान, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के साथ हिंदी साहित्य की सभी विधाओं का विस्तृत अध्ययन-अध्यापन किया जाता है।
- चौथा सत्र वैकल्पिक-पत्र (Elective Course) का है। इस सत्र के अंतर्गत भाषा, साहित्य, सिनेमा तथा विमर्शों पर आधारित कुल सात वैकल्पिक पत्र रखे गये हैं, इनमें से विद्यार्थियों को किसी एक विकल्प का चयन करना होता है, साथ ही इस सत्र में विद्यार्थियों को किसी एक विषय पर लघु शोध-प्रबंध/परियोजना कार्य भी प्रस्तुत करना होता है।

1. परिचय (Introduction):-

- प्रस्तुत पाठ्यक्रम विद्यार्थी केन्द्रित है जो समावेशी, रचनात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है|
- यह पाठ्यक्रम हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखण्डों एवं उनकी परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, विशेषताओं आदि पर आधारित है|
- यह पाठ्यक्रम भाषा एवं साहित्य के विविध पक्षों पर केन्द्रित है|
- इस पाठ्यक्रम में संस्कृति, समाज, सिनेमा, लोक, विमर्श के साथ-साथ हिंदी साहित्य के विभिन्न विचारधाराओं के अंगों एवं अनुषंगों पर एकाग्र है|
- भारतीय भाषा एवं साहित्य के तुलनात्मक पक्ष को भी यह पाठ्यक्रम समाहित करता है|
- यह पाठ्यक्रम संवेदनात्मक एवं संवेगात्मक मूल्यों पर केन्द्रित है|
- यह पाठ्यक्रम हिंदी एवं हिंदीतर प्रदेशों के विद्यार्थियों में भाषायी कौशल के विकास पर केन्द्रित है|
- यह पाठ्यक्रम रोजगारपरक है तथा विद्यार्थियों को वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण के लिए तैयार करता है|

2. उपाधिधारकों की अर्हताएँ (Qualification Descriptors for the Graduates)

प्रस्तुत पाठ्यक्रम:-

- विद्यार्थियों में भाषा एवं साहित्य के विविध पक्षों की समझ विकसित करेगा|
- विद्यार्थियों में रचनात्मक, सृजनात्मक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करेगा|
- विद्यार्थियों को साहित्य के साथ-साथ दर्शन, इतिहास, मनोविज्ञान, संस्कृति जैसे बहुआयामी विषयों का बोध कराएगा|
- विद्यार्थियों को देश, समाज, संस्कृति, परंपरा एवं लोक के प्रति संवेदनशील बनाएगा|
- विद्यार्थियों में सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के प्रति सजग एवं सचेत बनाएगा|
- विद्यार्थियों में स्वस्थ मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करेगा|
- विद्यार्थियों में अंतर-अनुशासनिक विषयों की समझ विकसित करेगा|

3. उपाधिधारक की विशेषताएँ (Graduates Attributes)

विद्यार्थियों में:-

- भाषा एवं साहित्य के ज्ञानानुशासन की गहन समझ विकसित होगी|

- विश्लेषणात्मक, विवरणात्मक एवं आलोचनात्मक वैचारिकी निर्मित होगी|
- भाषा के विविध अंगों एवं अनुषंगों की जानकारी प्राप्त होगी|
- अंतर-अनुशासनिक विषयों की पारस्परिक समझ बन पाएगी|
- भाषा एवं हिंदी साहित्य के अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी उपकरणों से जुड़ पाएंगे|
- सम्प्रेषण कौशल में दक्षता विकसित होगी|

4. कार्यक्रम-प्रतिफल (Programme Outcomes)

स्नातकोत्तर हिंदी कार्यक्रम:-

विद्यार्थियों में:-

1. भाषा एवं साहित्य की समग्र समझ, स्वाध्याय की योग्यता, विषय के प्रति जागरूकता और विषय के विभिन्न पक्षों की अनुसंधानात्मक समझ बन पाती है।
2. भाषा के विविध अंगों की सैद्धांतिक एवं अनुप्रायोगिक प्रक्रियाओं से अवगत हो पाते हैं।
3. साहित्य की विविध विधाओं की वैचारिकी की समझ एवं आलोचनात्मक विवेक विकसित हो पाता है।
4. साहित्य के अध्ययन से जीवन की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता का विकास हो पाता है।
5. साहित्य-अध्ययन से समाज एवं संस्कृति की विसंगतियों की पड़ताल कर पाते हैं।
6. प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति सजग हो पाते हैं और पारिस्थितिकी तंत्र के प्रति एक नवीन सौंदर्यबोध पैदा हो पाता है।
7. साहित्य के अध्ययन से संवेदनाओं एवं मानवीय मूल्यों का विकास हो पाता है।
8. साहित्य के अध्ययन से इतिहास, परंपरा एवं दर्शन की गहन समझ विकसित हो पाती है।
9. स्थानीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भाषा एवं साहित्य को समझ पाते हैं।
10. भाषिक कौशलों में दक्ष बन पाते हैं तथा अंतर-अनुशासनिक विषयों का बोध हो पाता है|

5. Programme structure

हिंदी का स्नातकोत्तर पाठयक्रम

(Programme: M.A. in Hindi)

कुल क्रेडिट(Total Credit) : 80

Course	*Credit*
Core	**52**
Departmental Elective	**22**
Open Elective	**06**

समयावधि- 02 वर्ष (04 सेमेस्टर)

अधिकतम समयावधि- 04 वर्ष (08 सेमेस्टर)

Course category	**NO of courses**	**Credit per course**	**Total Credits**
Foundation course (core course)	13	04	52

Departmental elective course	04	04	16
dissertation	01	06	06
Open elective (CBCT)	02	03	06
Total Credits			80

6. Semester wise schedule

प्रथम-सत्र (First Semester)
Total CR: 20

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 430	आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य	03	01	-	04	04
HN 431	छायावादी काव्य	03	01	-	04	04
HN 432	हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल और मध्यकाल	03	01	-	04	04
HN 433	भारतीय काव्यशास्त्र	03	01	-	04	04
HN 434	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	03	01	-	04	04

द्वितीय-सत्र (Second Semester)
Total CR: 19

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 435	सगुण भक्ति एवं रीति काव्य	03	01	-	04	04
HN 436	छायावादोत्तर काव्य	03	01	-	04	04
HN 437	हिंदी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल	03	01	-	04	04
HN 438	हिंदी भाषा एवं लिपि	03	01	-	04	04
Open elective		02	01	-	03	03

तृतीय-सत्र (Third Semester)
Total CR: 19

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 540	हिंदी कथा साहित्य : उपन्यास एवं कहानी	03	01	-	04	04
HN 541	हिंदी नाटक और निबंध	03	01	-	04	04
HN 542	भाषा विज्ञान	03	01	-	04	04
HN 543	हिंदी आलोचना	03	01	-	04	04
Open elective		02	01	-	03	03

चतुर्थ-सत्र (Fourth Semester)
वैकल्पिक-पत्र
(Elective Course)

(A)
प्रयोजनमूलक हिंदी (Prayojanmoolak Hindi)

7. **CR: 22**

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 544	प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत-संदर्भ	03	01	-	04	04
HN 545	राजभाषा हिंदी: संवैधानिक स्थिति एवं उसका अनुप्रयोगात्मक पक्ष	03	01	-	04	04
HN 546	हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार	03	01	-	04	04
HN 547	अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग	03	01	-	04	04
HN 548	लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य	00	00	6	00	06

(B)

आधुनिक हिंदी साहित्य (Adhunik Hindi Sahitya)

8. **CR: 22**

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 549	प्रेमचंद	03	01	-	04	04
HN 550	जयशंकर प्रसाद	03	01	-	04	04
HN 551	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	03	01	-	04	04
HN 552	सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'	03	01	-	04	04
HN 553	लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य	00	00	06	00	06

(C)

अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान (Anuprayukt Bhasha vigyan)

9. **CR: 22**

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 554	भाषा शिक्षण	03	01	-	04	04
HN 555	शैलीविज्ञान	03	01	-	04	04
HN 556	समाज भाषाविज्ञान	03	01	-	04	04
HN 557	कोश विज्ञान	03	01	-	04	04
HN 558	लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य	00	00	06	00	06

(D)

तुलनात्मक साहित्य (Tulnatmak Sahitya)

10. **CR: 22**

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 559	तुलनात्मक साहित्य:स्वरूप, उदभव और विकास	03	01	-	04	04
HN 560	भारतीय साहित्य : अवधारणा और विशेषताएँ	03	01	-	04	04

HN 561	पूर्वोत्तर की संस्कृति और साहित्य	03	01	-	04	04
HN 562	असम की संस्कृति और साहित्य	03	01	-	04	04
HN 563	लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य	00	00	06	00	06

(E)

लोक साहित्य (Lok Sahitya)

11. **CR: 22**

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 564	लोक साहित्य : सिद्धांत-संदर्भ	03	01	-	04	04
HN 565	लोकगीत और लोकगाथा	03	01	-	04	04
HN 566	लोक कथा एवं लोक नाटक	03	01	-	04	04
HN 567	लोक सुभाषित	03	01	-	04	04
HN 568	लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य	00	00	06	00	06

(F)

विमर्शमूलक अध्ययन (Vimarshmoolak adhayan)

12. **CR: 22**

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 569	अस्मितामूलक विमर्श	03	01	-	04	04
HN 570	स्त्रीमूलक विमर्श	03	01	-	04	04
HN 571	दलितमूलक विमर्श	03	01	-	04	04
HN 572	आदिवासीमूलक विमर्श	03	01	-	04	04
HN 573	लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य	00	00	06	00	06

(G)

सिनेमा, साहित्य और समाज (Cinema, Sahitya aur Samaj)

13. **CR: 22**

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 574	सिनेमा, साहित्य और समाज का अन्तः संबंध	03	01	-	04	04
HN 575	साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण	03	01	-	04	04
HN 576	हिंदी सिनेमा और अस्मितामूलक विमर्श	03	01	-	04	04
HN 577	साहित्य और सिनेमा का भाषाई एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य	03	01	-	04	04
HN 578	लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य	00	00	06	00	06

7. कार्यक्रम प्रतिफल का आरेख (Mapping of Course with Programme Outcomes)

M.A Programme	Programme Outcomes									
Core course	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PO7	PO8	PO9	PO10
SEMESTER I										
HN430				✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN431			✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
HN432	✓		✓	✓	✓		✓	✓	✓	
HN433	✓	✓	✓	✓	✓		✓	✓	✓	
HN434	✓		✓	✓	✓		✓	✓	✓	✓
SEMESTER II										
HN435	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
HN436	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	

HN437	✓		✓	✓	✓		✓	✓	✓	
HN438	✓	✓							✓	✓
SEMESTER III										
HN540	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN541	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓		
HN542	✓	✓							✓	✓
HN543	✓	✓	✓		✓		✓	✓	✓	✓
SEMESTER IV (DEPT.ELECTIVE) A										
HN544	✓	✓							✓	✓
HN545	✓	✓							✓	✓
HN546	✓	✓		✓	✓			✓	✓	✓
HN547	✓	✓							✓	✓
HN548	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
B										
HN549	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
HN550	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
HN551	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
HN552	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
HN553	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
C										
HN554	✓	✓		✓	✓		✓	✓	✓	✓
HN555	✓	✓							✓	✓
HN556	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN557	✓	✓							✓	✓

HN558	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
D										
HN559	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN560	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
HN561	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN562	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN563	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
E										
HN564	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	
HN565	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN566	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN567	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN568	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
F										
HN569	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN570	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN571	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN572	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN573	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
G										
HN574	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN575	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN576	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN577	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN578	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
Open elective **CBCS**	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓

HN501	✓	✓							✓	✓
HN502	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓
HN503	✓		✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓

8. मूल्यांकन पद्धति (EVALUATION PLAN)

मौखिक प्रस्तुति (ORAL PRESENTATION)

मानक (CRITERIA)	1	2	3	4	5	**स्कोर** (SCORE)
श्रोताओं का ध्यान	श्रोताओं का ध्यानाकर्षण **नहीं**	श्रोताओं का ध्यानाकर्षण **अल्प**	श्रोताओं का ध्यानाकर्षण **आंशिक**	श्रोताओं का ध्यानाकर्षण **अर्द्धपूर्ण**	श्रोताओं का ध्यानाकर्षण **पूर्ण**	
स्पष्टता	विषय की स्पष्टता **नहीं**	विषय की स्पष्टता **अल्प**	विषय की स्पष्टता **आंशिक**	विषय की स्पष्टता **अर्द्धपूर्ण**	विषय की स्पष्टता **पूर्ण**	
विषय-वस्तु	तथ्यों की स्पष्टता व व्यवस्था **नहीं**	तथ्यों की स्पष्टता व व्यवस्था **अल्प**	तथ्यों की स्पष्टता व व्यवस्था **आंशिक**	तथ्यों की स्पष्टता व व्यवस्था **अर्द्धपूर्ण**	तथ्यों की स्पष्टता व व्यवस्था **पूर्ण**	
रचनात्मकता	प्रस्तुति की शैली में विविधता व नवीनता **नहीं**	प्रस्तुति की शैली में विविधता व नवीनता **अल्प**	प्रस्तुति की शैली में विविधता व नवीनता **आंशिक**	प्रस्तुति की शैली में विविधता व नवीनता **अर्द्धपूर्ण**	प्रस्तुति की शैली में विविधता व नवीनता **पूर्ण**	
प्रस्तुति-अवधि	प्रस्तुति के लिए आवंटित समय का अनुपालन **नहीं**	प्रस्तुति के लिए आवंटित समय का अनुपालन **अल्प**	प्रस्तुति के लिए आवंटित समय का अनुपालन **आंशिक**	प्रस्तुति के लिए आवंटित समय का अनुपालन **अर्द्धपूर्ण**	प्रस्तुति के लिए आवंटित समय का अनुपालन **पूर्ण**	
भाषण-कौशल	अभिव्यक्ति की प्रभविष्णुता **नहीं**	अभिव्यक्ति की प्रभविष्णुता **अल्प**	अभिव्यक्ति की प्रभविष्णुता **आंशिक**	अभिव्यक्ति की प्रभविष्णुता **अर्द्धपूर्ण**	अभिव्यक्ति की प्रभविष्णुता **पूर्ण**	
					TOTAL	
					REMARK	

लिखित परीक्षा (Written test)

मानक (CRITERIA)	1	2	3	4	5	**स्कोर** (SCORE)
विषय-वस्तु/तथ्यात्मकता	तथ्यों की प्रस्तुति **नहीं**	तथ्यों की प्रस्तुति **अल्प**	तथ्यों की प्रस्तुति **आंशिक**	तथ्यों की प्रस्तुति **अर्द्धपूर्ण**	तथ्यों की प्रस्तुति **पूर्ण**	
स्पष्टता	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **नहीं**	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **अल्प**	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **आंशिक**	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **अर्द्धपूर्ण**	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **पूर्ण**	
रचनात्मकता/मौलिकता	उत्तर लेखन में रचनात्मता/ मौलिकता **नहीं**	उत्तर लेखन में रचनात्मकता/ मौलिकता **अल्प**	उत्तर लेखन में रचनात्मकता/ मौलिकता **आंशिक**	उत्तर लेखन में रचनात्मकता/ मौलिकता **अर्द्धपूर्ण**	उत्तर लेखन में रचनात्मकता/ मौलिकता **पूर्ण**	
तारतम्यता	लेखन में विचारों की तारतम्यता **नहीं**	लेखन में विचारों की तारतम्यता **अल्प**	लेखन में विचारों की तारतम्यता **आंशिक**	लेखन में विचारों की तारतम्यता **अर्द्धपूर्ण**	लेखन में विचारों की तारतम्यता **पूर्ण**	
व्याकरण एवं वर्तनी	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **नहीं**	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **अल्प**	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **आंशिक**	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **अर्द्धपूर्ण**	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **पूर्ण**	
निष्कर्षात्मक कथन	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **नहीं**	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **अल्प**	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **आंशिक**	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **अर्द्धपूर्ण**	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **पूर्ण**	

प्रदत्त कार्य (Assignment)

मानक (CRITERIA)	1	2	3	4	5	**स्कोर** (SCORE)
विषय-वस्तु/तथ्यात्मकता	तथ्यों की प्रस्तुति **नहीं**	तथ्यों की प्रस्तुति **अल्प**	तथ्यों की प्रस्तुति **आंशिक**	तथ्यों की प्रस्तुति **अर्द्धपूर्ण**	तथ्यों की प्रस्तुति **पूर्ण**	
स्पष्टता	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **नहीं**	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **अल्प**	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **आंशिक**	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **अर्द्धपूर्ण**	तथ्यों की प्रस्तुति में स्पष्टता **पूर्ण**	
रचनात्मकता/मौलिकता	उत्तर लेखन में रचनात्मता/ मौलिकता **नहीं**	उत्तर लेखन में रचनात्मकता/ मौलिकता **अल्प**	उत्तर लेखन में रचनात्मकता/ मौलिकता **आंशिक**	उत्तर लेखन में रचनात्मकता/ मौलिकता **अर्द्धपूर्ण**	उत्तर लेखन में रचनात्मकता/ मौलिकता **पूर्ण**	
तारतम्यता	लेखन में विचारों की तारतम्यता **नहीं**	लेखन में विचारों की तारतम्यता **अल्प**	लेखन में विचारों की तारतम्यता **आंशिक**	लेखन में विचारों की तारतम्यता **अर्द्धपूर्ण**	लेखन में विचारों की तारतम्यता **पूर्ण**	
व्याकरण एवं वर्तनी	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **नहीं**	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **अल्प**	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **आंशिक**	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **अर्द्धपूर्ण**	व्याकरण एवं वर्तनी की शुद्धता **पूर्ण**	
निष्कर्षात्मक कथन	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **नहीं**	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **अल्प**	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **आंशिक**	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **अर्द्धपूर्ण**	निष्कर्षात्मक कथन/ सार तत्वों की प्रस्तुति **पूर्ण**	
आलोचनात्मक दृष्टि	विषय के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि **नहीं**	विषय के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि **अल्प**	विषय के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि **आंशिक**	विषय के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि **अर्द्धपूर्ण**	विषय के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि **पूर्ण**	

शोध-प्रविधि	विषयानुकूल प्रविधि का प्रयोग **नहीं**	विषयानुकूल प्रविधि का प्रयोग **अल्प**	विषयानुकूल प्रविधि का प्रयोग **आंशिक**	विषयानुकूल प्रविधि का प्रयोग **अर्द्धपूर्ण**	विषयानुकूल प्रविधि का प्रयोग **पूर्ण**	
संदर्भ	शोध के अनुकूल संदर्भ-शैली का अनुपालन	शोध के अनुकूल संदर्भ-शैली का अनुपालन	शोध के अनुकूल संदर्भ-शैली का अनुपालन	शोध के अनुकूल संदर्भ-शैली का अनुपालन	शोध के अनुकूल संदर्भ-शैली का अनुपालन	

9. Detailed Syllabus

अनिवार्य-पत्र (Core Course)

SEMESTER-I

आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR

HN 430	आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य	03	01	-	04	04

Course outcome

- हिन्दी साहित्य के इतिहास के आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य के विविध पक्षों का ज्ञान हो पाता है।
- सरहपाद, गोरखनाथ, विद्यापति, कबीर एवं जायसी के साहित्य से परिचित हो पाते हैं।
- इसके अध्ययन से इतिहास, परंपरा एवं दर्शन की गहन समझ विकसित हो पाती है।
- आदिकालीन एवं मध्यकालीन समाज की संस्कृति, भाषा एवं साहित्य का बोध हो पाता है।
- इस साहित्य के अध्ययन से समतामूलक सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का निर्माण हो पाता है।

इकाई 1 : सरहपाद एवं गोरखनाथ : आदिकालीन काव्य
संपादक : वासुदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
पाठ्य पद सं.: दोहा कोश से दोहा सं.- 1,2,5,6,7,9,11,12,13,14. सबदी से
छंद सं.- 3,5,6,8,9,13,14,17,18,19)

इकाई 2 : विद्यापति : विद्यापति - संपादक : डॉ. शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,2010
पाठ्य पद सं.:- (3,4,5,8,9,10,11,12,13,14,15,16,43,48,52,59,83,95)

इकाई 3 : कबीर ग्रंथावली : संपादक– श्यामसुंदर दास (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
पाठ्य पद सं.– आरंभिक बीस (20) पद ।

इकाई 4 : जायसी : पद्मावत, संपादक– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
पाठ्य पद : नागमती वियोग खंड
पाठ्य पुस्तक : पद्मावत, संपादक– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली-2011.

संदर्भ ग्रंथ :

1. सांकृत्यायन, राहुल, *हिंदी काव्यधारा*, किताब महल, इलाहाबाद, 2001.
2. पांडेय, शंभुनाथ, *आदिकालीन हिंदी साहित्य,* विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 1998.
3. मिश्र, शिवकुमार, *भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
4. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, *कबीर,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.
5. अग्रवाल, पुरुषोत्तम, *अकथ कहानी प्रेम की*, राजकमल प्रकाशन, 2005.
6. श्रीवास्तव, वीरेंद्र, विद्यापति : *अनुशीलन एवं मूल्यांकन : दो खंडों में,* बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2008.
7. सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, *हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
8. साही, विजयदेवनारायण, *जायसी,* हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1995.
9. स्नातक, विजयेंद्र, *कबीर*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1993.
10. शुल्क, रामचंद्र, *जायसी : एक नई दृष्टि*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001.

SEMESTER-I

छायावादी काव्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR

HN 431	**छायावादी काव्य**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

course outcome :

- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के एक विशिष्ट कालखंड का बोध हो पाता है।
- मनुष्य, प्रकृति एवं पर्यावरण के बीच रागात्मक संबंध स्थापित हो पाता है|
- राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास हो पाता है|
- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में स्वच्छंदतावाद तथा छायावाद के अंतःसंबंधों को समझ पाते हैं|
- छायावाद के प्रतिनिधि कवियों के साहित्यिक एवं भाषिक वैशिष्ट से परिचित हो पाते हैं|
- साहित्य, समाज एवं प्रकृति के प्रति एक नवीन सौंदर्यबोध पैदा हो पाता है|

इकाई 1 : उद्भव और विकास : स्वच्छंदतावाद तथा छायावाद, छायावाद में रहस्यानुभूति स्वचंछदतावाद, कल्पना, राष्ट्रवादी विचारधारा, सौंदर्यबोध, काव्य भाषा, शक्तिकाव्य ।

इकाई 2 : जयशंकर प्रसाद : ईड़ा सर्ग ।

इकाई 3 : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : जूही की कली, वह तोड़ती पत्थर, कुकुरमुत्ता ।

इकाई 4 : महादेवी वर्मा : मैं नीर भरी दुःख की बदली, यह मंदिर का दीपक, जाग तुझको दूर जाना ।

संदर्भ ग्रंथ:

1. मुक्तिबोध, गजानन माधव, *कामायनी: एक पुनर्विचार*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.
2. सिंह, रामलाल, *कामायनी अनुशीलन*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000.
3. शास्त्री, जानकीवल्लभ, *महाप्राण निराला*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.
4. रघुवंश, *आधुनिक कवि निराला,* हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली, 2006.
5. लाल, शारदा, *सुमित्रानंदन पंत : कवि और काव्य*, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, 1997.
6. मदान, इंद्रनाथ, *महादेवी*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2001.
7. श्रीवास्तव, परमानंद, *महादेवी*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004.
8. पांडेय, गंगाप्रसाद, *महीयसी महादेवी*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009.
9. सिंह, नामवर, *छायावाद*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1998.
10. सिंह, नामवर, *आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
11. सिंह, उदयभानु, *छायावाद,,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002.

SEMESTER-I

हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल और मध्यकाल

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 432	**हिन्दी साहित्य का इतिहास : आदिकाल और मध्यकाल**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

Course outcome :

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- हिंदी साहित्येतिहास के आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक की विभिन्न प्रवृत्तियों, परिस्थितियों एवं अन्य आनुषंगिक विषयों की व्यापक समझ विकसित हो पाती है|
- आदिकाल और भक्तिकाल की विभिन्न प्रवृत्तियों, परिस्थितियों एवं अन्य आनुषंगिक विषयों से अवगत हो पाते हैं|
- आदिकाल के विभिन्न कवियों, काव्य-धाराओं, गद्यसाहित्य के स्वरूप एवं इनके विविध पक्षों का बोध हो पाता है|
- भक्तिकाल के विभिन्न कवियों, काव्य-धाराओं, गद्यसाहित्य के स्वरूप एवं इनके विविध पक्षों की जानकारी प्राप्त हो पाती है|
- रीति काल के विभिन्न कवियों, काव्य-धाराओं, गद्यसाहित्य के स्वरूप एवं इनके विविध पक्षों का ज्ञान हो पाता है|

इकाई 1 : साहित्य दर्शन और साहित्येतिहास, हिंदी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा, हिंदी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन एवं नामकरण।

इकाई 2 : आदिकाल : पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ, आदिकालीन हिंदी साहित्य की विभिन्न धाराएँ (सिद्ध, नाथ, जैन, रासो, लौकिक साहित्य आदि), आदिकालीन गद्य साहित्य।

इकाई 3 : पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) : पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ, भक्ति आंदोलन, भक्तिकालीन विभिन्न काव्यधाराएँ (निर्गुण तथा सगुण) भक्तिकालीन गद्य साहित्य।

इकाई 4 : उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) : पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ, विभिन्न काव्यधाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त), रीतिकालीन गद्य साहित्य।

संदर्भ ग्रंथ :

1. शुक्ल, रामचंद्र, *हिंदी साहित्य का इतिहास*, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2002.
2. नगेंद्र, *हिंदी साहित्य का इतिहास*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2005.
3. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास*, लोकभारती प्रकाशन, 1986.
4. गुप्त, गणपतिचंद्र, *हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास : प्रथम खंड*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002.
5. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, *हिंदी साहित्य की भूमिका*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988.
6. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, *हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986.
7. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, *हिंदी साहित्य का आदिकाल*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000.
8. मिश्र, शिवकुमार, *भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य*, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1991.
9. पांडेय, मैनेजर, *साहित्य और इतिहास दृष्टि*, पीपुल्स लिटरेसी, 1981.
10. नगेंद्र, *रीतिकाव्य की भूमिका*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1995.
11. सिंह, बच्चन, *हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2002.
12. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद, *हिंदी साहित्य का अतीत*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
13. शर्मा, रामविलास, *परंपरा का मूल्यांकन*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004.

SEMESTER-I

भारतीय काव्यशास्त्र

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 433	**भारतीय काव्यशास्त्र**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोर्स प्रतिफल (Course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- भारतीय काव्यशास्त्र की चिंतन-परंपरा, भारतीय आचार्यों द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं काव्यशास्त्रीय आलोचना की समग्र समझ विकसित हो पाती है|
- काव्य के स्वरूप,लक्षण,तत्व, हेतु, प्रयोजन, गुण, दोष एवं शब्द-शक्तियों का सम्यक ज्ञान हो पाता है|
- रस एवं अलंकार संप्रदाय के स्वरूप, परिभाषा, प्रकार एवं इनके प्रवर्तकों के सिद्धांतों का अनुप्रयोग कर पाते हैं|
- ध्वनि एवं वक्रोक्ति संप्रदाय के स्वरूप, परिभाषा, प्रकार एवं इनके प्रवर्तकों के सिद्धांतों का अनुपालन कर पाते हैं|
- रीति एवं औचित्य संप्रदाय के स्वरूप, परिभाषा, प्रकार एवं इनके प्रवर्तकों के सिद्धांतों की व्यावहारिक समझ बन पाती है|

इकाई 1 : काव्य का स्वरूप, काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य-तत्व, काव्य-गुण, काव्य-दोष एवं शब्द-शक्तियाँ।

इकाई 2 : (क) रस संप्रदाय : प्रवर्तक और आचार्य, रस का स्वरूप, अंग, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण, छंद – अर्थ, परिभाषा,प्रकार एवं प्रक्रिया।

(ख) अलंकार संप्रदाय : प्रवर्तक और आचार्य, अलंकार – परिभाषा एवं वर्गीकरण, काव्यालंकार का महत्त्व।

इकाई 3 : (क) ध्वनि संप्रदाय : प्रवर्तक और आचार्य, ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि के भेद- ध्वनि काव्य, गुणीभूत व्यंग्य एवं चित्र-काव्य।

(ख) वक्रोक्ति संप्रदाय : प्रवर्तक और आचार्य, वक्रोक्ति का स्वरूप, वक्रोक्ति के प्रमुख छः भेद।

इकाई 4 : (क) रीति संप्रदाय : प्रवर्तक और आचार्य, रीति की अवधारणा एवं भेद, रीति एवं गुण।

(ख) औचित्य संप्रदाय : प्रवर्तक और आचार्य, औचित्य का स्वरूप, भेद एवं महत्त्व।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नगेंद्र, *भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1998.
2. चौधरी, सत्यदेव, *भारतीय काव्यशास्त्र*, अलंकार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.
3. मिश्र, भगीरथ, *काव्यशास्त्र*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1995.
4. नगेंद्र, *रस सिद्धांत*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1999.
5. नगेंद्र, *रीतिकाव्य की भूमिका*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002.
6. राय, गुलाब, *काव्य के सिद्धांत और अध्ययन*, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 2000.
7. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, *रस-मीमांसा,* हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली, 2008.
8. गुप्त, गणपतिचंद्र, *भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-सिद्धांत*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
9. पांडेय, शशिभूषण शीतांशु, *भारतीय काव्यशास्त्र और शैलीविज्ञान*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2002.
10. मिश्र, रामदहिन, *काव्य-दर्पण*, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1983.

SEMESTER-I

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 434	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	02	01	-	03	03

कोर्स प्रतिफल (Course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा, प्रमुख कला चिंतकों, काव्य-सिद्धांतों, साहित्य-दर्शन एवं साहित्यिक आलोचना की पाश्चात्य दृष्टियों का ज्ञान हो पाता है|
- प्लेटो एवं अरस्तु के काव्य सिद्धांतों का अनुप्रयोग कर पाते हैं|
- क्रोंचे एवं टी. एस. इलियट की सैद्धांतिक अवधारणा, स्वरूप और प्रयोग का अनुपालन कर पाते हैं|
- वर्ड्सवर्थ एवं आई.ए.रिचर्ड्स के सिद्धांतों की व्यावहारिक समझ बन पाती है|
- संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद, रूपवाद, विखंडनवाद और नयी समीक्षा के स्वरूप एवं सिद्धांत की समग्र समझ बन पाती है।

इकाई 1 : (क) पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा, प्लेटो का काव्य सिद्धांत
(ख) अरस्तू : अनुकरण एवं विरेचन सिद्धांत, त्रासदी एवं कामदी

इकाई 2 : क्रोंचे (अभिव्यंजनावाद), टी.एस.इलियट (परंपरा की अवधारणा, निर्वैक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ सहसंबंध)

इकाई 3 : वर्ड्सवर्थ : काव्यभाषा सिद्धांत, आई.ए.रिचर्ड्स : संप्रेषण सिद्धांत, मूल्य-सिद्धांत एवं काव्य-भाषा सिद्धांत

इकाई 4 : संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद, रूपवाद, विखंडनवाद और नयी समीक्षा

संदर्भ ग्रन्थ :

1. जैन, निर्मला, बाँठिया कुसुम, *पाश्चात्य साहित्य चिंतन*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1980.
2. नगेंद्र (सं), *पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1979.
3. सहाय, राजवंश हीरा, *पाश्चात्य साहित्यलोचन कोश*, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1980.
4. मिश्र, भगीरथ, *पाश्चात्य साहित्यशास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1994.
5. वार्ष्णेय, लक्ष्मीसागर, *पाश्चात्य साहित्यशास्त्र*, हिंदी समिति, लखनऊ, 2002.
6. शर्मा, देवेंद्रनाथ, *पाश्चात्य काव्यशास्त्र*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2000.
7. जुनेजा, वेदप्रकाश, *भारतीय एवं पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र*, सिद्धार्थ प्रकाशन करनाल, हरियाणा.
8. नगेंद्र, *अरस्तू का काव्यशास्त्र*, हिंदी अनुसंधान परिषद, दिल्ली, 1998.
9. जैन, निर्मला, *प्लेटो का काव्य-सिद्धांत*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2002.

10. तिवारी, रामचंद्र, *भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2007.
11. पाण्डेय, मैनेजर, *अनभै साँचा*, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012.
12. जैन, निर्मला, *काव्य चिंतन की पश्चिमी परंपरा*, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012.

SEMESTER-II

सगुण भक्ति एवं रीति काव्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 435	**सगुण भक्ति एवं रीति काव्य**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोर्स प्रतिफल (course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- मध्यकालीन समाज के साहित्य, भाषा एवं संस्कृति का बोध हो पाता है।
- भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन काव्य के विविध पक्षों का ज्ञान हो पाता है।
- इतिहास, परंपरा एवं दर्शन की गहन समझ विकसित हो पाती है।
- समतामूलक सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का निर्माण हो पाता है।
- सूरदास, तुलसीदास, बिहारी एवं घनानन्द के काव्य से परिचित हो पाते हैं।

इकाई 1 : सूरदास : भ्रमरगीत, आचार्य रामचंद्र शुक्ल
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
पाठ्य पद : पद 21 से 40 तक

इकाई 2 : तुलसीदास : रामचरित मानस, तुलसीदास
गीता प्रेस, गोरखपुर, 1999
पाठ्य अंश- अयोध्याकांड : चित्रकूट प्रसंग से 20 पद

इकाई 3 : बिहारी : बिहारी रत्नाकर, (सं.) पंडित जगन्नाथ दास रत्नाकर
नागरी प्रसारिणी सभा, काशी, 1995
पाठ्य पद- (प्रारंभिक 20 दोहे)

इकाई 4 : घनानंद : घनानंद कवित्त, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
संजय बुक सेंटर, वाराणसी
पाठ्य पद- 2,5,7,8,9,10,12,15,33,82 (कुल 10 पद)

संदर्भ ग्रंथ :

1. शुक्ल, रामचंद्र, *सूरदास*, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2005.
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, *सूर-साहित्य*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2003.
3. पांडेय, मैनेजर, *भक्तिआंदोलन और सूरदास का काव्य,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
4. शुक्ल, रामचंद्र, *गोस्वामी तुलसीदास,* नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2004.
5. त्रिपाठी, विश्वनाथ, *लोकवादी तुलसी,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2005.
6. सिंह, उदयभानु, *तुलसी काव्य मीमांसा*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1975.
7. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद, *बिहारी,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2000.
8. सिंह, बच्चन, *बिहारी का नया मूल्यांकन*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001.
9. सिंह, लल्लन, *घनानंद*, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2004.
10. मिश्र, भगीरथ, *हिंदी रीति साहित्य*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2001.

11. इमरै, बंघा, *सनेह को मारग*, *घनानंद जीवन और काव्य*, वाणी प्रकाशन, 2010, दिल्ली.

SEMESTER-II

छायावादोत्तर काव्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 436	**छायावादोत्तर काव्य**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोर्स प्रतिफल (course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- छायावाद एवं छायावादोत्तर साहित्य, भाषा एवं संस्कृति का बोध हो पाता है।
- दिनकर एवं अज्ञेय का परिचय एवं इनके निर्धारित काव्यकृतियों का व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक ज्ञान हो पाता है।
- नागार्जुन एवं मुक्तिबोध का परिचय एवं इनके निर्धारित कविताओं का व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक ज्ञान हो पाता है।
- केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर एवं धूमिल के काव्यों के व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक ज्ञान की गहरी समझ विकसित हो पाती है|
- इतिहास, परंपरा एवं दर्शन का सम्यक बोध हो पाता है|
- समतामूलक सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का निर्माण हो पाता है।

इकाई 1 :(क) दिनकर : उर्वशी, दिनकर
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2000
पाठ्यांश: उर्वशी, पाँचवाँ अंक

(ख) अज्ञेय : अस्मिता
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1998
पाठ्य कविता : कलगी बाजरे की, बावरा अहेरी

इकाई 2 :(क) नागार्जुन : अस्मिता,
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1998
पाठ्य कविता : अकाल और उसके बाद, सिंदूर तिलकित भाल

(ख) मुक्तिबोध : प्रतिनिधि कविताएँ
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
पाठ्यांश : अंधेरे में

इकाई 3 :(क) केदारनाथ अग्रवाल : फूल नहीं रंग बोलते है
परिमल प्रकाशन, दिल्ली, 2000
पाठ्यांश : फूल नहीं रंग बोलते हैं, धूप का गीत

इकाई 4 :(क) धूमिल : संसद से सड़क तक
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1996
पाठ्यांश : भाषा की रात, पटकथा

(ख) शमशेर बहादुर सिंह : अस्मिता
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1998

पाठ्य कविताएँ : बात बोलेगी, वह सलोना जिस्म

संदर्भ ग्रंथ :

1. नवल, नंदकिशोर, *समकालीन काव्य-यात्रा,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
2. शर्मा, रामविलास, *नई कविता और अस्तित्ववाद,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2001.
3. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद, *समकालीन हिंदी कविता,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2003.
4. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, *अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या,* ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
5. पालीवाल, कृष्णदत्त, *अज्ञेय कविकर्म का संकट,* किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 2005.
6. मेहता,श्री नरेश, *मुक्तिबोध : एक अवधूत कविता,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2000.
7. सिंह, विजय बहादुर, *नागार्जुन और उनका रचना संसार,* हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली, 2002.

SEMESTER-II

हिंदी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 437	**हिन्दी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोर्स प्रतिफल (course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- आधुनिक काल की भाषा एवं संस्कृति का बोध हो पाता है।
- आधुनिक काल का उद्भव, विकास एवं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं आदि की परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का ज्ञान हो पाता है।
- प्रमुख गद्य विधाओं जैसे नाटक, निबंध, कहानी एवं आलोचना इत्यादि के स्वरूप एवं भेदों की समझ विकसित हो पाती है|
- छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं नई कविता के परिवेश एवं उनकी प्रवृतियों से अवगत हो पाते हैं|
- समकालीन साहित्य एवं अस्मितामूलक विमर्शों का सम्यक बोध हो पाता है|

इकाई 1 : आधुनिक काल : उद्भव और विकास (मध्यकालीनता तथा आधुनिकता बोध, नवजागरण और भारतेंदु युग, प्रेस का उदय तथा प्रमुख पत्र–पत्रिकाएं) ।

इकाई 2: प्रमुख गद्य साहित्य का उद्भव और विकास : प्रारंभिक हिंदी नाटक, निबंध और आलोचना हिंदी कहानी तथा अन्य गद्य विधाएं।

इकाई 3: छायावाद तथा उत्तर छायावादी काव्य : परिवेश और प्रवृत्तियाँ (प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नई कविता) ।

इकाई 4: साठोत्तरी कविता, समकालीन साहित्य, अस्मितावादी विमर्श (दलित और स्त्री) ।

संदर्भ ग्रंथ :

1. शुक्ल, रामचंद्र, *हिंदी साहित्य का इतिहास,* नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2002.

2. सिंह, नामवर, *आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ,* लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,1994.
3. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, *हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास,* लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.
4. शर्मा, रामविलास, *नई कविता और अस्तित्ववाद,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.
5. शर्मा, रामविलास, *लोक जागरण और हिंदी साहित्य,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1990.
6. तिवारी, रामचंद्र, *हिंदी गद्य साहित्य,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992.
7. वाजपेयी, नंददुलारे, *आधुनिक साहित्य,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.
8. चतुर्वेदी, वैद्यनाथ, *नई कविता का इतिहास,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1998.
9. त्रिपाठी, विश्वनाथ, *हिंदी आलोचना*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
10. नवल, नंदकिशोर, *हिंदी आलोचना का विकास*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2003.
11. राय, गोपाल, *हिंदी उपन्यास का इतिहास*, राजकमल प्रकाशन, 1999.
12. राय, गोपाल, *हिंदी कहानी का इतिहास*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
13. गुप्त, गणपति चंद्र, हिंदी *साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
14. सिंह, बच्चन, *आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1996.
15. सिंह, बच्चन, *हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास*, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2000.

SEMESTER-II

हिन्दी भाषा एवं लिपि

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 438	**हिन्दी भाषा एवं लिपि**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोर्स प्रतिफल (course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- हिंदी भाषा की उत्पत्ति, स्वरूप एवं इतिहास का बोध होता है।
- हिंदी क्षेत्र एवं हिंदी बोलियों के स्वरूप, वर्गीकरण आदि के साथ-साथ भाषा और बोली के तुलनात्मक संदर्भ की समझ विकसित हो पाती है|
- हिंदी भाषा-रचना के प्रकार एवं प्रक्रिया का सम्यक बोध हो पाता है|
- देवनागरी लिपि के विकास, विशेषता एवं वैज्ञानिकता की गहरी समझ हो पाता है|
- हिंदी के विराम चिह्नों की पहचान, प्रकार एवं प्रकार्य का सटीक बोध हो पाता है|

इकाई 1 : भारतीय आर्यभाषा : उदभव एवं विकास- प्राचीन भारतीय आर्यभाषा, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा एवं आधुनिक भारतीय आर्यभाषा।

इकाई 2 : हिन्दी भाषा : उदभव एवं विकास- आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिककाल, अपभ्रंश एवं पुरानी हिन्दी का विकास।

इकाई 3 : हिन्दी भाषा-क्षेत्र एवं उसकी बोलियाँ : हिन्दी भाषा-क्षेत्र- हिन्दी क्षेत्र, हिंदीतर क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्र , बोलियों का वर्गीकरण, भाषा और बोली : साम्य-वैषम्य।

इकाई 4 : हिन्दी भाषा-रचना :

(क) व्याकरणिक-रचना – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय ।

(ख) व्याकरणिक कोटियाँ – लिंग, वचन, पुरुष, काल, पक्ष, वृत्ति, वाच्य और कारक।

इकाई 5 : देवनागरी लिपि : देवनागरी लिपि- विकास, विशेषता एवं वैज्ञानिकता। देवनागरी लिपि का मानकीकरण। हिन्दी वर्तनी - स्वरूप एवं परिभाषा, हिन्दी वर्तनी की एकरूपता। विराम चिन्ह - स्वरूप एवं हिन्दी विराम चिन्ह ।

संदर्भ ग्रंथ :

1. वर्मा, धीरेंद्र, *हिंदी भाषा का इतिहास*, हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, 1990.
2. तिवारी, उदयनारायण, *हिंदी भाषा का उद्गम और विकास*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1995.
3. तिवारी, भोलानाथ, *हिंदी भाषा*, किताब महल, इलाहाबाद, 2002.
4. तिवारी, भोलानाथ, *हिंदी भाषा की संरचना*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1998.
5. पाठक, रघुवंशमणि, *भाषा-विज्ञान, हिंदी भाषा एवं लिपि*, संवेदना प्रकाशन,लखनऊ, 2010.
6. वर्मा, धीरेंद्र, *हिंदी भाषा का इतिहास*, हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, 1995.
7. बाहरी, हरदेव, *हिंदी भाषा : उद्भव और विकास*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2000.
8. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, *हिंदी भाषा की संरचना*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1999.
9. सिंह, सूरजभान, *हिंदी भाषा संरचना और प्रकार्य,* साहित्य सहकार, दिल्ली, 1998.
10. तिवारी, भोलानाथ (सं), *हिंदी भाषा की लिपि संरचना*, साहित्य सहकार, दिल्ली, 1996.
11. चौधरी, अनंत, *नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी*, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना.
12. भाटिया, ओमप्रकाश, *नागरी लिपि का उद्भव और विकास*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
13. चटर्जी, सुनीति कुमार, *भारतीय आर्य भाषाएँ और हिंदी*, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 1960.

SEMESTER-III

हिंदी कथा साहित्य : उपन्यास एवं कहानी

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 540	**हिन्दी कथा साहित्य : उपन्यास एवं कहानी**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोर्स प्रतिफल (course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- हिंदी कथा साहित्य के इतिहास, परंपरा एवं दर्शन के साथ-साथ उसके विविध स्वरूपों तथा समीक्षात्मक विश्लेषण का बोध हो पाता है|
- प्रेमचंद के गोदान की कथावस्तु एवं तत्कालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति से अवगत हो पाते हैं|
- फणीश्वर नाथ रेणु के मैला आंचल के अध्ययन से स्थानीयता एवं आंचलिकता का बोध हो पाता है|
- अज्ञेय के शेखर एक जीवनी के माध्यम से मनोवैज्ञानिकता का ज्ञान हो पाता है|
- नई कहानी आंदोलन के स्वरूप एवं निर्धारित प्रतिनिधि कहानियों द्वारा तत्कालीन समाज एवं संस्कृति की गहरी समझ विकसित हो पाती है|

इकाई 1: प्रेमचंद : गोदान।

इकाई 2: फणीश्वर नाथ रेणु : मैला आंचल।

इकाई 3: सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय : शेखर एक जीवनी भाग 1.।

इकाई 4: नई कहानी आंदोलन (प्रतिनिधि कहानियाँ): अमरकांत(डिप्टी कलेक्टरी, निर्मल वर्मा (परिंदे), मोहन राकेश (मिस पॉल), उषा प्रियंवदा(वापसी), मन्नू भंडारी (त्रिशंकु), राजेद्र यादव (जहाँ लक्ष्मी कैद है)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. राय, गोपाल, *गोदान : नया परिप्रेक्ष,* अनुपम प्रकाशन, पटना, 2000.
2. शर्मा, रामविलास, *प्रेमचंद और उसका युग,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989.
3. रहबर, हंसराज, *प्रेमचंद व्यक्तित्व और कृतित्व*, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1962.
4. जैन, नेमिचंद, *अधूरे साक्षात्कार,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1989.
5. सिंह, विजयमोहन, *कथा समय,* राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1983.

6. मधुरेश, *हिंदी उपन्यास का विकास,* सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998.
7. सिंह, नामवर, *कहानी : नई कहानी,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1982.
8. यादव, राजेंद्र, *नई कहानी : संवेदना और स्वरूप,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2000.
9. धनंजय (सं), *समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि,* अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1970.
10. मधुरेश, *सिलसिला,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1979.
11. सिंह, विजयमोहन, *आज की हिंदी कहानी,* राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1983.
12. मधुरेश, *नई कहानी : पुनर्विचार,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1999.
13. ठाकुर, देवेश, *मैला आँचल की रचना प्रक्रिया,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2001.
14. त्रिपाठी, विश्वनाथ, *कुछ कहानियाँ कुछ विचार,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1988.

SEMESTER-III

हिंदी नाटक और निबंध

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 541	**हिन्दी नाटक और निबंध**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोर्स प्रतिफल (course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- नाटक एवं निबंध के इतिहास, परंपरा एवं दर्शन के साथ-साथ उसके विविध स्वरूपों तथा आलोचनात्मक विश्लेषण का बोध हो पाता है|
- जयशंकर प्रसाद के चंद्रगुप्त के माध्यम से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास हो पाता है|
- मोहन राकेश के निर्धारित नाटक एवं एकांकियों द्वारा तत्कालीन समाज की विसंगतियों की पड़ताल कर पाते हैं|
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों से सामाजिक सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक भाव से अनुप्राणित हो पाते हैं|

इकाई 1 : जयशंकर प्रसाद : चंद्रगुप्त
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2005

इकाई 2 : मोहन राकेश : आधे-अधूरे
राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2002

इकाई 3 : मोहन राकेश (संपादक) : पाँच पर्दे
राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993
पाठ्य सामग्री : जोंक, औरंगजेब की आखिरी रात, सड़क, बंदी, स्ट्राइक।

इकाई 4 : (क) आचार्य रामचंद्र शुक्ल : चिंतामणि, भाग-1

इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, 1986
पाठ्य निबंध : ईर्ष्या, काव्य में लोकमंगल की भावना, श्रद्धा और भक्ति

(ख) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : अशोक के फूल
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
पाठ्य निबंध : अशोक के फूल, भरतीय संस्कृति की देन, एक कुत्ता और एक मैना।

संदर्भ ग्रंथ :

1. तनेजा, सत्येंद्र, *नाटककार जयशंकर प्रसाद*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
2. श्रोत्रिय, प्रभाकर, *जयशंकर प्रसाद : एक पुनर्मूल्यांकन*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1998.
3. सिंह, बच्चन, *हिंदी नाटक*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997.
4. दास, ब्रजरत्न, *हिंदी नाट्य साहित्य*, हिंदी साहित्य कुटीर, वाराणसी, 2006.
5. ओझा, दशरथ, *हिंदी नाटक का उद्भव और विकास*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली,1983.
6. तनेजा, जयदेव, *समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1995.
7. चातक, गोविंद, *आधुनिक नाटकों का मसीहा : मोहन राकेश*, राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली, 1998.
8. सिंह, उदयभानु, *आधुनिक गद्य की विधाएँ*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
9. तिवारी, रामचंद्र, *हिंदी निबंध और निबंधकार*, हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली-2007.
10. त्रिपाठी, उमाकांत, *निबंध और निबंध*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2000.
11. तिवारी, रामचंद्र, *हिंदी का गद्य साहित्य*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2000.

SEMESTER-III

भाषाविज्ञान

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 542	**भाषा विज्ञान**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोर्स प्रतिफल (course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- भाषा एवं भाषा-विज्ञान का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों का समग्र ज्ञान हो पाता है|
- भाषा-विज्ञान का अंतर-अनुशासनिक विषयों के साथ अंतर-संबंध एवं भाषिक कौशलों का बोध हो पाता है|
- भाष-विज्ञान के प्रमुख शाखाओं के स्वरूप एवं भाषिक-प्रक्रिया की गहरी समझ विकसित हो पाती है|
- ध्वनि-विज्ञान एवं रूप-विज्ञान के स्वरूप, परिभाषा एवं विविध पहलुओं का ज्ञान हो पाता है|
- वाक्य-विज्ञान और अर्थ-विज्ञान के द्वारा वाक्य एवं अर्थ के स्वरूप, संरचना, कारण एवं दिशाओं का बोध हो पाता है|

इकाई 1 : भाषा : अर्थ एवं परिभाषा, स्वरूप एवं उत्पत्ति, भाषा के विभिन्न रूप, भाषा के अभिलक्षण, लिखित एवं उच्चरित भाषा, भाषा और बोली।

इकाई 2 : भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं परिभाषा, भाषा विज्ञान की शाखाएँ (मुख्य एवं गौण), भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की प्रवृत्तियाँ – सामान्य और वर्णनात्मक, एककालिक

और बहुकालिक, सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त, तुलनात्मक और व्यतिरेकी, समाज भाषाविज्ञान और मनोभाषाविज्ञान भाषाविज्ञान का अन्य विषय के साथ संबंध।

इकाई 3 : (क) ध्वनि विज्ञान : स्वरूप एवं परिभाषा, शाखाएँ- उच्चारण, श्रव्य एवं यांत्रिक, वागेन्द्रिय एवं उच्चारण-प्रक्रिया, ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि एवं स्वनिम में अंतर, ध्वनि परिवर्तन : कारण एवं दिशाएँ, स्वनिम : स्वरूप, परिभाषा, विशेषता, प्रकार एवं हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था ।

(ख) रूप विज्ञान : स्वरूप एवं परिभाषा, शब्द और पद, उपसर्ग और प्रत्यय, रूप-परिवर्तन : कारण एवं दिशाएँ, रुपिम : स्वरूप एवं प्रकार, संरूप ।

इकाई 4 : (क) वाक्य विज्ञान : वाक्य की परिभाषा, अवयव, उपवाक्य, पदबंध, वाक्य के प्रकार, प्रोक्ति की अवधारणा, स्वरूप एवं प्रकार।

(ख) अर्थ विज्ञान : अर्थ की अवधारणा एवं प्रकृति, अर्थ परिवर्तन : कारण एवं दिशाएँ।

संदर्भ ग्रंथ :

1. तिवारी, भोलानाथ, *भाषा-विज्ञान*, किताब महल, इलाहाबाद, 2002.
2. शर्मा, देवेंद्रनाथ, *भाषा-विज्ञान की भूमिका*, अनुपम प्रकाशन, पटना, 1986.
3. पाठक, रघुवंशमणि, *भाषा विज्ञान :हिंदी भाषा और लिपि*, संजय बुक सेंटर, वाराणसी, 2011.
4. सक्सेना, बाबूराम, *सामान्य भाषा विज्ञान*, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, 2005.
5. द्विवेदी, कपिलदेव, *भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009.
6. तिवारी, उदयनारायण, *भाषाशास्त्र की रूपरेखा*, भारती भंडार, इलाहाबाद, 2004.
7. शर्मा, रामकिशोर, *आधुनिक भाषाविज्ञान के सिद्धांत*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005.
8. अग्रवाल, मुकेश, *हिंदी भाषा की संरचना*, के.एल.पचौरी प्रकाशन, दिल्ली, 2004.

SEMESTER-III

हिंदी आलोचना

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 543	**हिन्दी आलोचना**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोर्स प्रतिफल (course outcome)

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से:

- हिंदी आलोचना के इतिहास, परंपरा एवं दर्शन के साथ-साथ उसके विविध स्वरूपों तथा समीक्षात्मक विश्लेषण का बोध हो पाता है|
- हिंदी के आलोचकों एवं उनकी आलोचकीय दृष्टि का ज्ञान हो पाता है|
- रचनाओं एवं रचनाकारों के प्रति विद्यार्थियों में आलोचनात्मक विवेक पैदा हो पाता है|

- भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावाद एवं छायावादोत्तर युग की हिंदी आलोचना के निर्धारित आलोचकों एवं उनकी आलोचकीय पद्धति के विविध पक्षों की समझ विकसित हो पाती है|

इकाई 1 : हिंदी आलोचना की परंपरा : उद्भव और विकास (भारतेंदु, बालमुकुंद गुप्त बालकृष्ण भट्ट की आलोचना पद्धति)।

इकाई 2 : द्विवेदी युगीन आलोचना : महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद शुक्ल, प्रेमचंद।

इकाई 3 : छायावाद युगीन हिंदी आलोचना : हजारी प्रसाद द्विवेदी, नगेंद्र के आलोचना सिद्धांत।

इकाई 4 : छायावादोत्तर हिंदी आलोचना : रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, नंद दुलारे वाजपेयी

संदर्भ ग्रंथ :

1. त्रिपाठी, विश्वनाथ, हिंदी आलोचना , राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.2004
2. नवल, नंदकिशोर, हिंदी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2003
3. तिवारी, रमेश, आलोचना के तीन आयाम, संगम प्रकाशन, इलाहाबाद, 1995
4. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, इतिहास और आलोचक दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद. 2013
5. तिवारी, रामचंद, हिंदी आलोचन शिखरों का साक्षात्कार, लोकभारती प्रकाशन, इलाबाहाद, 2009
6. शर्मा, विनयमोहन, *शोध प्रविधि,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1990.
7. जैन, रवींद्र कुमार, *साहित्यिक अनुसंधान के आयाम*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2008.

SEMESTER-IV

वैकल्पिक पत्र : **(F)**

(Elective Paper)

विमर्शमूलक अध्ययन

प्रस्तुत-पत्र विमर्शमूलक अध्ययन पर केन्द्रित है । इसका उद्देश्य अस्मितामूलक, दलितमूलक, स्त्रीमूलक और आदिवासीमूलक जैसी चार प्रमुख साहित्यिक धाराओं का सविस्तार अध्ययन-विश्लेषण प्रस्तुत करना है जिससे विद्यार्थियों में उक्त धाराओं की समझ विकसित हो सके। इस विकल्प के अंतर्गत चार पत्र रखे गए हैं ।

F-1

अस्मितामूलक विमर्श

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 569	**अस्मितामूलक विमर्श**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

Course Outcome (कोर्स प्रतिफल)

इस पत्र के अध्ययन से –

- अस्मितामूलक विमर्श के इतिहास तथा सांस्कृतिक विकास यात्रा से अवगत हो पाते हैं एवं राष्ट्रवाद के साथ अस्मिता के संबंधों की पड़ताल कर पाते हैं।
- अस्मिता की परिभाषा, उसके उद्भव एवं विकास तथा साहित्यिक एवं सामाजिक प्रभावों की समझ विकसित हो पाता है।
- अस्मिता के विविध रूपों से अवगत हो पाते हैं तथा दैनिक व्यवहार में उसके प्रभावों को विश्लेषित कर पाते हैं।
- विद्यार्थी लैंगिक अस्मिता, हाशिये की अस्मिता, अल्पसंख्यक अस्मिता के प्रति संवेदनशील हो पाते हैं।
- अस्मिता और भूमंडलीकरण के परस्पर संबंध और प्रभावों का विश्लेषण कर पाते हैं।

इकाई 1 : अस्मिता की अवधारणाएँ और सिद्धांत , अस्मिता का अर्थ, निर्माण प्रक्रिया, प्रकृति।

इकाई 2 : इतिहास और अस्मिता, स्मृति तथा अस्मिता और सत्ता, अस्मिता की राजनीति ।

इकाई 3 : अस्मिता का विकास, अस्मिता और राष्ट्र, भूमंडलीकरण और अस्मिता ।

इकाई 4 : व्यक्ति, अस्मिता और सामूहिक अस्मिता , हाशिए की अस्मिताएँ, अल्पसंख्यक अस्मिताएँ।

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रगतिशील सांस्कृतिक आंदोलन, मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, चंचल सिंह चौहान, राजकमल प्रकाशन, 2004 ।
2. हिंदू परंपराओं का राष्ट्रीयकरण: भारतेंदु और उन्नीसवी सदी का भारत, वसुधा डालमिया, अनु. संजीव कुमार, योगेंद्र दत्त, राजकमल प्रकाशन, 2010।
3. अस्मिता और न्याय, आलोक टंडन, लोकभारती प्रकाशन, 2018 ।
4. समकालीन आलोचना विमर्श, अवधेश कुमार सिंह, लोकभारती प्रकाशन. 2018 ।

F-3

दलितमूलक विमर्श

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 571	**दलितमूलक विमर्श**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

Course Outcome (कोर्स – प्रतिफल)

इस पत्र के अध्ययन से –

- दलित साहित्य की अवधारणा की सैद्धांतिकी से अवगत हो पाते हैं।
- जूठन उपन्यास में वर्णित दलित जीवन से परिचित हो पाते हैं।
- दलित साहित्य तथा साहित्यकारों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर पाते हैं।
- हाशिए के जीवन के प्रति संवेदनशील चेतना का विकास हो पाता है।
- हिंदी के अन्य साहित्यिक विधाओं में वर्णित हाशिए के समाज के प्रति जिम्मेदार हो पाते हैं।

इकाई 1: दलित साहित्य की अवधारणा तथा सैद्धांतिकी (प्रमुख सैद्धांतिक पक्ष, साहित्यिक अभिव्यक्तियों का स्वरूप)।

इकाई 2: हिन्दी का दलित गद्य साहित्य-1 : ओम प्रकाश वाल्मिकी (जूठन) ।

इकाई 3: हिन्दी का दलित गद्य साहित्य-2 : संजीव(सूत्रधार), उदय प्रकाश (मोहनदास)।

इकाई 4: हिन्दी की प्रमुख दलित कविता **:** अछूतानंद (अछूत कहाँ तक पडे रहेंगे)
नागार्जुन(हरिजन गाथा)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सिंह,राजेंद्र प्रसाद, हिन्दी का अस्मितामूलक साहित्य और अस्मिताकार, अमन प्रकाशन, कानपुर,2016।
2. सं. दूबे, अभय, आधुनिकता के आइने में दलित, सीएसडीएस, नई दिल्ली, 2015।

F-2

स्त्रीमूलक विमर्श

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 570	**स्त्रीमूलक विमर्श**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

Course Outcome (कोर्स – प्रतिफल)

इस पत्र के अध्ययन से –

- स्त्री विमर्श की अवधारणा (भारतीय एवं पाश्चात्य) की सैद्धांतिकी से अवगत हो पाते हैं।
- स्त्री विमर्शमूलक हिंदी साहित्य की विविध विधाओं का सम्यक ज्ञान हो पाता है।
- हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के विकास-क्रम के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर पाते हैं।
- समाज में विद्यान लैंगिक विषमता के प्रति संवेदनशील बन पाते हैं।
- हिंदी के अन्य साहित्यिक विधाओं में वर्णित लैंगिक विषमता की बारीकियों की पड़ताल कर पाने में सक्षम हो पाते हैं।

इकाई 1: अवधारणा और स्त्री मुक्ति आंदोलन : पाश्चात्य और भारतीय**,** पितृसत्तात्मकता के सूत्र।

इकाई 2 : हिन्दी का स्त्रीवादी गद्य साहित्य-1 : उषा प्रियंवदा (पचपन खंभे लाल दीवारें) , मन्नू भंडारी (यही सच है), कृष्णा सोबती(सिक्का बदल गया)।

इकाई 3: हिन्दी का स्त्रीवादी गद्य साहित्य-2 : अनु. प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता (द सेकेंड सेक्स), महादेवी, श्रृंखला की कड़ियाँ

इकाई 4: हिन्दी की प्रमुख स्त्रीवादी कविताएं : कीर्ति चौधरी (सीमारेखा), कात्यायनी (सात भाइयों के बीच चंदा)

संदर्भ ग्रंथ :

1. सिंह,राजेंद्र प्रसाद, हिन्दी का अस्मितामूलक साहित्य और अस्मिताकार, अमन प्रकाशन, कानपुर,2016।
2. अनामिका, स्वाधीनता का स्त्री पक्ष, राजकमल प्रकाशन, 2014।
3. अनु. खेतान. प्रभा, स्त्री उपेभिता, राजकमल प्रकाशन, 2000।
4. दूबे, अभय/ यादव राजेंद्र/ खेतान प्रभा, पितृसत्ता के नये रूप, राजकमल प्रकाशन,2000।

F-4

आदिवासीमूलक विमर्श

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 572	आदिवासीमूलक विमर्श	03	01	-	04	04

Course Outcome (कोर्स – प्रतिफल)

इस पत्र के अध्ययन से –

- आदिवासी विमर्श की अवधारणा एवं सैद्धांतिकी से अवगत हो पाते हैं।
- आदिवासी आंदोलन के वैचारिक परिप्रेक्ष्य एवं स्वरूप का बोध हो पाता है।
- हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में वर्णित आदिवासी मूलक विमर्श का सम्यक ज्ञान हो पाता है।
- आदिवासीमूलक विमर्श पर आधारित रचनाओं के प्रति समालोचनात्मक दृष्टि विकसित कर पाते हैं।
- प्रकृति एवं मनुष्य के साहचर्य के प्रति संवेदनशील दृष्टि विकसित हो पाती है।

इकाई 1: अवधारणा और आंदोलन (जल, जंगल ,जमीन और आदिवासी पहचान का सवाल, विस्थापन की समस्या)।

इकाई 2 : हिन्दी का आदिवासी साहित्य : महुआ माझी उपन्यास (मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ।

इकाई 3 : हिन्दी का आदिवासी साहित्य (कविता) : हरीराम मीणा (घूणी तपे तीर)।

इकाई 4 : हिन्दी का प्रमुख आदिवासी उपन्यास : श्रीप्रकाश मिश्र : जहाँ बांस फूलते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सिंह,राजेंद्र प्रसाद, हिन्दी का अस्मितामूलक साहित्य और अस्मिताकार, अमन प्रकाशन, कानपुर,2016।
2. सं. मीणा ,जगत सिंह, एवं मीणा ,कुलदीप सिंह भारत के आदिवासी : चुनौतियां एवं संभावनाएं. वाणी प्रकाशन।
3. गुप्ता , रमणिका, आदिवासी साहित्य यात्रा, राजकमल प्रकाशन,2018।
4. पूर्ववत, आदिवासी : शौर्य एवं विद्रोह, राजकमल प्रकाशन, 2015।

F-5

लघु शोध-प्रबंध/परियोजनाकार्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 573	**लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य**	**00**	**00**	**06**	**00**	**06**

Course Outcome (कोर्स – प्रतिफल)

इस पत्र के अध्ययन से –

- शोध- प्रविधि के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक पक्ष का बोध हो पाता है।
- सृजनात्मकता एवं मौलिकता का विकास हो पाता है।
- समाज और साहित्य के अंतर्संबंधों की पड़ताल कर पाते हैं।
- शोध नैतिकता एव अनुसंधान के तकनीक का सम्यक ज्ञान हो पाता है।
- भाषिक कौशल तथा शैली विकसित कर पाते हैं।

प्रस्तुत पत्र में निर्धारित पाठ्यक्रम के चारों पत्रों से संबंधित किसी एक विषय पर शिक्षक के निर्देशन में विद्यार्थी लघु शोध-प्रबंध/परियोजना कार्य प्रस्तुत करेंगे।

SEMESTER-IV

वैकल्पिक पत्र : **(A)**

(Elective Paper)

प्रयोजनमूलक हिंदी

आधुनिक युग में हिंदी की प्रयोजनमूलकता पर काफी ध्यान दिया गया है। हिंदी भाषा के व्यावहारिक उपयोग और प्रयोगशीलता पर विशेष महत्त्व देते हुए विद्यार्थियों को रोजगार की तरफ प्रोत्साहित करना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। इस वैकल्पिक पाठ्यक्रम में चार पत्र होंगे।

A-1

प्रयोजनमूलक हिन्दी; सिद्धांत-संदर्भ

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 544	प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत-संदर्भ	03	01	-	04	04

समसामयिक समय में हिन्दी के प्रयोजनमूलक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकता, उद्देश्य, सीमा, विविध रूप और प्रयोग-क्षेत्र के साथ-साथ पारिभाषिक शब्दावली की प्रकृति, प्रकार और प्रक्रिया के ज्ञान-विज्ञान से अवगत करना है।

इकाई 1 : प्रयोजनमूलक हिन्दी - सिद्धांत एवं प्रक्रिया : आवश्यकता, अभिप्राय, स्वरूप, उद्देश्य, सीमा, विशेषता एवं विविध रूप।

इकाई 2 : प्रयोजनमूलक हिन्दी : शैलियाँ एवं व्यवहार क्षेत्र- शैली (स्वरूप एवं प्रकार),प्रयुक्ति– संकल्पना, विशेषता एवं प्रकार।

इकाई 3 : पारिभाषिक शब्दावली : स्वरूप एवं परिभाषा, विशेषता एवं प्रकार, पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण-सिद्धांत एवं उसकी प्रक्रिया।

इकाई 4 : पारिभाषिक शब्दावली – पारिभाषिक शब्द-सूची (प्रशासनिक क्षेत्र)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. गोदरे, विनोद, प्रयोजनमूलक हिन्दी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002
2. झाल्टे, दंगल, प्रयोजनमूलक हिन्दी: सिद्धांत एवं प्रयोग, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2004
3. गोस्वामी, कृष्णकुमार, प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिन्दी, कलिंगा प्रकाशन, दिल्ली.
4. सिंह, दिनेश प्रसाद, प्रयोजनमूलक हिन्दी और पत्रकारिता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली,2007
5. श्रीवास्तव, अर्चना, प्रयोजनमूलक हिन्दी: विविध आयाम,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.
6. पाण्डेय, कैलाशनाथ, प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

A-2

राजभाषा हिंदी : संवैधानिक स्थिति एवं उसका अनुप्रयोगात्मक पक्ष

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 545	**राजभाषा हिन्दी : संवैधानिक स्थिति एवं उसका अनुप्रयोगात्मक पक्ष**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

राजभाषा हिंदी का स्वरूप कई वर्षों के निरंतर प्रयास से विकसित एवं निश्चित हुआ है। प्रस्तुत पत्र में राजभाषा की संवैधानिक स्थिति पर विचार करते हुए विद्यार्थियों को उसके अनुप्रयुक्त पक्ष से परिचित कराया जाएगा।

इकाई 1 :राजभाषा हिंदी : संवैधानिक स्थिति

संवैधानिक प्रावधान, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा हिंदी के विकास की विविध दिशाएँ, हिंदी के विकास में महात्मा गांधी एवं विभिन्न संस्थाओं का योगदान, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा।

इकाई 2 :राजभाषा का अनुप्रयोगात्मक पक्ष : सरकारी पत्राचार

सामान्य कार्यालयी पत्र, ज्ञापन, कार्यालय ज्ञापन, अर्द्धशासकीय पत्र, कार्यालयी आदेश, अधिसूचना, अनुस्मारक, परिपत्र।

इकाई 3 :राजभाषा का अनुप्रयोगात्मक पक्ष :

टिप्पण एवं आलेखन, स्वरूप, विशेषताएँ, प्रकार, नमूने।

इकाई 4 :राजभाषा का अनुप्रयोगात्मक पक्ष :

संक्षेपण एवं सार लेखन, संक्षेपण के प्रकार, विशेषताएँ, उपयोग और महत्त्वपूर्ण बिंदु।

संदर्भ ग्रंथ :

1. श्रीवास्तव, रवींद्र, *प्रयोजनमूलक हिंदी*, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1997.
2. सिंह, विजयपाल, *प्रयोजनमूलक हिंदी,* हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली, 1993.
3. भाटिया, कैलाश चंद्र, *राजभाषा हिंदी*, हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली, 1996.
4. टंडन, पूरनचंद, *प्रशासनिक हिंदी*, पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1995.
5. टंडन, पूरनचंद, *आजीविका साधक हिंदी*, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
6. श्रीवास्तव, गोपीनाथ, *सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
7. झाल्टे, दंगल, *प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
8. तरुण, रमेश, *प्रयोजनमूलक हिंदी,* साहित्य मंदिर, दिल्ली, 2005.
9. सिंघल, ओम प्रकाश, *प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी*, जगतराम एंड सन्स, दिल्ली, 2010.
10. श्रीवास्तव, अर्चना, प्रयोजनमूलक हिन्दी: विविध आयाम,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.
11. पाण्डेय, कैलाशनाथ, प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

A-3

हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 546	**हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

हिंदी पत्रकारिता का आरंभ भारतेंदु युग से ही हो जाता है। स्वाधीनता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आधुनिक युग में हिंदी पत्रकारिता ने अपना विशेष स्थान बना लिया है। प्रस्तुत पत्र में हिंदी पत्रकारिता के विकास पर ध्यान रखते हुए जनसंचार में उसकी भूमिका से छात्रों का परिचय कराया जाएगा।

इकाई 1 :हिंदी पत्रकारिता का इतिहास :

भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता, हिंदी पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप।

इकाई 2 :समाचार संकलन एवं लेखन :

समाचार की अवधारणा एवं बुनियादी तत्त्व, समाचार संग्रह-पद्धति और लेखन प्रक्रिया, समाचार का वर्गीकरण- खोजी, व्याख्यात्मक, अनुवर्तन समाचार, संवाददाता, रिपोर्टिंग, प्रेसविधि।

इकाई 3 :जनसंचार : अवधारणा एवं अनुप्रयोग

संचार की परिभाषा, प्रक्रिया, परिधि एवं स्वरूप, जनसंचार, सत्ता और जनमत के अंत:संबंध, जनसंचार के माध्यम (दृश्य एवं श्रव्य)

इकाई 4 :विज्ञापन :

विज्ञापन की अवधारणा, स्वरूप एवं महत्त्व, भाषिक विशेषताएँ, सरकारी एवं व्यावसायिक विज्ञापन लेखन।

संदर्भ ग्रंथ :

1. पांडेय पृथ्वीनाथ, *पत्रकारिता : परिवेश और प्रवृत्तियाँ*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004.
2. तिवारी, अर्जुन, *आधुनिक पत्रकारिता*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2002.
3. राय, कृष्णकुमार, *गणेश शंकर विद्यार्थी और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन*, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2009.
4. तिवारी, अर्जुन, *हिंदी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007.

5. सेठी, रेखा, *विज्ञापन डॉट कॉम*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.
6. चतुर्वेदी, जगदीश्वर, *हिंदी पत्रकारिता के इतिहास की भूमिका*, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली, 1997.
7. वैदिक, वेदप्रताप, *हिंदी पत्रकारिता विविध आयाम*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1999.
8. गुप्त, ब्रजमोहन, *जनसंचार विविध आयाम*, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000.
9. इस्सर, देवेंद्र, *जनमाध्यम : संप्रेषण और विकास*, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2008.
10. मिश्र, कृष्ण बिहारी, *हिंदी पत्रकारिता*, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1990.

A-4

अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं अनुप्रयोग

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 547	**अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

प्रयोजनमूलक हिंदी के अंतर्गत अनुवाद का विशेष महत्त्व है। राजभाषा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने के लिए अनुवाद महत्त्वपूर्ण माध्यम है। प्रस्तुत पत्र में विद्यार्थियों को अनुवाद के सिद्धांत एवं उसकी प्रक्रिया से परिचित कराते हुए अनुवाद के अनुप्रयुक्त पक्ष से उनका अभ्यास कराया जाएगा।

इकाई 1 : अनुवाद : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, प्रकृति एवं सीमाएँ, अनुवाद के प्रकार, अनुवाद की समस्याएँ।

इकाई 2 : अनुवाद की प्रक्रिया : स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा, विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन, नाइडा, न्यूमार्क और बाथगेट का संदर्भ।

इकाई 3 : अनुवाद के उपकरण : कोश, पारिभाषिक शब्दावली, कंप्यूटर का उपयोग।

इकाई 4 : अनुवाद का अनुप्रयुक्त पक्ष : हिंदी से अंग्रेजी एवं अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से असमिया तथा असमिया से हिंदी अनुवाद का अभ्यास।

संदर्भ ग्रंथ :

1. तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान*, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, 2002.
2. सोनटक्के, आदिनाथ, *अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग*, चंद्रलोक प्रकाशन, दिल्ली, 1998.
3. राय, त्रिभुवन, *अनुवाद : स्वरूप एवं आयाम*, अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद, 1988.
4. तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद-कला*, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, 1997.
5. जी.गोपीनाथन, *अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग*, भारती ग्रंथ निकेतन, दिल्ली, 1999.
6. कुमार, सुरेश, *अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987.
7. अय्यर, एन.ई.विश्वनाथ, *अनुवाद-कला*, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990.
8. टंडन, पूरनचंद, *अनुवाद शतक भाग-1, भाग-2*, भारतीय अनुवाद परिषद, 2000.
9. पालीवाल, सीताराणी, *अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.
10. सक्सेना, प्रदीप, *अनुवाद सैद्धांतिकी*, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2000.
11. अय्यर, एन.ई.विश्वनाथ, *अनुवाद भाषाएँ-समस्याएँ*, ज्ञान-गंगा, दिल्ली, 2011.

A-5

लघु शोध-प्रबंध / परियोजनाकार्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 548	**लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य**	**00**	**00**	**06**	**00**	**06**

प्रस्तुत सत्र में निर्धारित पाठ्यक्रम के चारों पत्रों से संबंधित किसी एक विषय पर शिक्षक के निर्देशन में विद्यार्थी लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य प्रस्तुत करेंगे।

SEMESTER-IV

वैकल्पिक पत्र : **(B)**

(Elective Paper)

आधुनिक हिंदी साहित्य

इसके पूर्व के तीन सेमेस्टर में छात्रों को हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य के इतिहास, साहित्य एवं काव्यशास्त्र के विविध पक्षों की गहन जानकारी दी जा चुकी है। इस वैकल्पिक पत्र में विद्यार्थियों को आधुनिक हिंदी साहित्य का विशेष परिचय दिया जाएगा। इसके अंतर्गत हिंदी के विशिष्ट साहित्यकार प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचनाओं का अध्ययन किया जाएगा। इस विकल्प के अंतर्गत चार पत्र रखे गए हैं।

B-1

प्रेमचंद

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 549	प्रेमचंद	03	01	-	04	04

इकाई 1 :रंगभूमि

इकाई 2 :कर्मभूमि

इकाई 3 : कहानी : मानसरोवर (भाग-1, भाग-2)-कफन, पूस की रात, ठाकुर का कुआँ, बूढ़ी काकी, ईदगाह, सद्गति।

इकाई 4 : विचारक प्रेमचंद :
राजनैतिक विचार, सामाजिक विचार एवं साहित्यिक विचार।

संदर्भ ग्रंथ :

1. राय, गोपाल, *हिंदी उपन्यास का इतिहास*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2005.
2. शर्मा, रामविलास, *प्रेमचंद और उनका युग*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
3. मिश्र, रामदरश, *हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2012.
4. यादव, राजेंद्र, *उपन्यास स्वरूप और संवेदना*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2007.
5. तिवारी, रामचंद्र, *हिंदी उपन्यास*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010.
6. सत्येंद्र (सं.), *प्रेमचंद*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
7. रहबर, हंसराज, *प्रेमचंद : व्यक्तित्व और कृतित्व*, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1962.
8. वाजपेयी, नंददुलारे, *प्रेमचंद : एक साहित्यिक विवेचन*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
9. राय, अमृत, *प्रेमचंद की प्रासंगिकता*, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1985.
10. शर्मा, रामविलास, *प्रेमचंद*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2000.

B-2

जयशंकर प्रसाद

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 550	जयशंकर प्रसाद	03	01	-	04	04

इकाई 1 : आँसू।

इकाई 2 : कविताएँ : झरना और लहर से पाँच कविताएँ।

इकाई 3 : नाटक : स्कंदगुप्त।

इकाई 4 : कहानी : आकाशदीप, पुरस्कार, मधुआ, गुंडा, छोटा जादूगर।

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रेमशंकर, *प्रसाद का काव्य*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004.
2. श्रोत्रिय, प्रभाकर, *जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2006.
3. शर्मा, जगन्नाथ प्रसाद, *प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन*, विश्वविद्यालय प्रकाशन.
4. सिंह, रामलाल, *कामायनी अनुशीलन*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1986.
5. शर्मा, विनयमोहन, *आँसू की समीक्षा*, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1950.
6. सिंह, नामवर, *छायावाद*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1997.
7. मिश्र, श्याम किशोर, *छायावाद की परंपरा*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2000.
8. कुमार, सिद्धनाथ, *प्रसाद के नाटकों का पुनर्मूल्यांकन*, अनुपम प्रकाशन, 1998.

B-3

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 551	**सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

इकाई 1 : तुलसीदास

इकाई 2 : राम की शक्तिपूजा

इकाई 3 : कुकुरमुत्ता

इकाई 4 : प्रबंध प्रतिमा : पाँच निबंध

संदर्भ ग्रंथ :

1. शर्मा, रामविलास, *निराला की साहित्य साधना*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1990.
2. सिंह, बच्चन, *निराला आत्महंता आस्था*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008.
3. वर्मा, धनंजय, *निराला का काव्य*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1975.
4. माथुर, अनुपम, *निराला की काव्यचेतना*, हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली, 2006.
5. शुक्ल, रामदेव, *निराला का गद्य साहित्य*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1980.
6. नगेंद्र, *राम की शक्तिपूजा*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1977.

B-4

सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 552	**सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

इकाई 1 : अज्ञेय : विचारधारा एवं साहित्यिक महत्त्व।

इकाई 2: उपन्यास : नदी के द्वीप।

इकाई 3: कविता : असाध्य वीणा।

इकाई 4: निबंध : कला का स्वभाव और उद्देश्य, भारतीयता।

संदर्भ ग्रंथ :

1. चतुर्वेदी, रामस्वरुप, अज्ञेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
2. चतुर्वेदी, रामस्वरुप, अज्ञेय की आधुनिक कविता की समस्याएँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद
3. भावुक,कृष्ण, अज्ञेय की काव्य चेतना, अशोक प्रकाशन, दिल्ली।
4. थानवी ओम, अपने-अपने अज्ञेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
5. सिंह, विजय मोहन, अज्ञेय कथाकार और विचारक, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली।
6. पालीवाल,कृष्णदत्त, अज्ञेय और पूर्वोत्तर भारत, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

B-5

लघु शोध-प्रबंध/परियोजनाकार्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 553	**लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य**	**00**	**00**	**06**	**00**	**06**

प्रस्तुत सत्र में निर्धारित पाठ्यक्रम के चारों पत्रों से संबंधित किसी एक विषय पर शिक्षक के निर्देशन में विद्यार्थी लघु शोध-प्रबंध/परियोजना कार्य प्रस्तुत करेंगे।

SEMESTER-IV

वैकल्पिक पत्र : **(C)**

(Elective Paper)

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान

अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान का सरोकार भाषा-विज्ञान के व्यावहारिक पक्ष से है। वर्तमान समय में इसके व्यावहारिक पक्ष के अध्ययन-विश्लेषण की अनिवार्यता बढ़ी है और यह विद्यार्थियों हेतु रोजगारोन्मुख है। इस वैकल्पिक पत्र में अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान की प्रमुख शाखाओं- भाषा-शिक्षण, शैली विज्ञान एवं समाज भाषाविज्ञान के सिद्धांत एवं व्यवहार पक्ष का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। इस विकल्प के अंतर्गत चार पत्र रखे गए हैं।

C-1

भाषा-शिक्षण

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 554	**भाषा शिक्षण**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

भाषा-शिक्षण भाषा-विज्ञान का अनुप्रयुक्त पक्ष है। अत: यह पत्र भाषा-शिक्षण की सैद्धांतिकी एवं व्यवहारिकी के अध्ययन को उजागर करता है।

इकाई 1 : भाषा-शिक्षण : अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान की शाखा के रूप में भाषा-शिक्षण, भाषा-शिक्षण में भाषाविज्ञान की उपयोगिता, भाषा-शिक्षण का शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं भाषिक संदर्भ। भाषा अर्जन, भाषा-अधिगम तथा भाषा-शिक्षण।

इकाई 2 : मातृभाषा एवं अन्यभाषा शिक्षण-मातृभाषा एवं अन्यभाषा (दूसरी एवं विदेशी भाषा) की संकल्पना, अर्थ एवं महत्त्व। मातृभाषा एवं अन्यभाषा शिक्षण की स्थिति एवं संस्याएँ। अन्य भाषा-शिक्षण की प्रमुख पद्धतियाँ।

इकाई 3 : भाषा-शिक्षण : मूल्यांकन एवं परीक्षण-मूल्यांकन तथा परीक्षण की संकल्पना एवं प्रकार, भाषा परीक्षण-प्रकार्य प्रकार एवं निर्माण के आधारभूत सिद्धांत। भाषा के आधारभूत कौशल एवं उनके कौशल प्रकार। त्रुटि विश्लेषण की भाषा शिक्षण में उपयोगिता।

इकाई 4 : व्यतिरेकी विश्लेषण : स्वरूप एवं परिभाषा, व्यतिरेकी विश्लेषण के सिद्धांत, भाषा शिक्षण में व्यतिरेकी विश्लेषण की उपादेयता।

संदर्भ ग्रंथ :

1. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, *भाषा शिक्षण*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1998.
2. तिवारी, भोलानाथ, *भाटिया, कैलाशचंद्र*, हिंदी भाषा शिक्षण, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली.
3. वर्मा, एस.के. सिंह, दिलीप, *भाषा-अध्ययन विविध पक्ष*, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1998.
4. शास्त्री, सीताराम, *हिंदी शिक्षण की समस्याएँ*, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 1984.
5. तिवारी, भोलानाथ, *व्यतिरेकी भाषा विज्ञान*, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1986
6. रेड्डी, विजयराघव, *व्यतिरेकी भाषा विज्ञान*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1989.
7. अग्रवाल, मुकेश, *भाषा-शिक्षण*, के.एल.पचौरी प्रकाशन, दिल्ली, 2000.
8. Lado, Robert, *Language teaching*, London Longwan, 1957.

C-2

शैली विज्ञान

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 555	**शैलीविज्ञान**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

शैलीविज्ञान साहित्यिक भाषा के सर्जनात्मक प्रयोगों का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण करता है। अतः इस पत्र का अभीष्ट शैलीविज्ञान के सिद्धांत एवं अनुप्रयोग पक्ष से विद्यार्थियों को अवगत कराना है ।

इकाई 1 : शैली और शैलीविज्ञान : शैली- स्वरूप,अवधारणा(भारतीय एवं पाश्चात्य) एवं प्रकार,
शैलीविज्ञान- स्वरूप, अवधारणा एवं प्रकार, सामान्य भाषा एवं साहित्यिक भाषा,
शैलीविज्ञान का अन्य शास्त्रों से संबंध।

इकाई 2 : शैली विज्ञान की परंपरा : भारतीय एवं पाश्चात्य संदर्भ में, हिन्दी के प्रमुख
शैलीवैज्ञानिक- प्रो. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, प्रो. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'।

इकाई 3 : शैलीविज्ञान के प्रमुख उपकरण : चयन, विचलन, समानांतरता, अप्रस्तुत विधान-
स्वरूप, परिभाषा, प्रकार, विश्लेषण-प्रक्रिया।

इकाई 4 : प्रोक्ति एवं पाठ-विश्लेषण : परिभाषा, स्वरूप, प्रकार एवं विश्लेषण--प्रक्रिया।

संदर्भ ग्रंथ :

1. तिवारी, भोलानाथ, *शैलीविज्ञान*, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, 1997.
2. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, *संरचनात्मक शैलीविज्ञान*, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1980.
3. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, *साहित्य का भाषिक चिंतन*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1990.
4. मिश्र, विद्यानिवास, *रीति विज्ञान*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1998.
5. पांडेय, शशिभूषण, शीतांशु, *शैली और शैली विश्लेषण*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2007.
6. त्रिपाठी, उमाकांत, *आधुनिक व्यंग्य निबंध रीतिविज्ञान के निकष पर*, कृष्णावली प्रकाशन, वाराणसी, 1988.
7. कुमार, सुरेश, *शैलीविज्ञान,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2011.
8. नगेंद्र, शैली विज्ञान, *नेशनल पब्लिशिंग हाउस,* दिल्ली, 1976.
9. पांडेय, शशिभूषण, शीतांशु, *शैलीविज्ञान: प्रतिमान और विश्लेषण*, देवदार प्रकाशन, दिल्ली, 1994.

C-3

समाज भाषाविज्ञान

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 556	**समाज भाषाविज्ञान**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

समाज भाषाविज्ञान, भाषाविज्ञान का आनुप्रयोगिक पक्ष है जो भाषा का समाज सापेक्ष अध्ययन करता है। अत: प्रस्तुत पत्र भाषा के सामाजिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए समाज भाषा-विज्ञान के सिद्धांत एवं व्यवहार पक्ष को प्रस्तुत करता है।

इकाई 1 : समाज भाषा-विज्ञान : समाज भाषा-विज्ञान और भाषा का सामाजिक संदर्भ, समाज व्यवस्था एवं भाषा व्यवस्था का अंत: संबंध, भाषा के सामाजिक व्यवस्था के रूप में अध्ययन, भाषा की समरूपी एवं विषमरूपी प्रकृति।

इकाई 2 : समाज भाषा-विज्ञान की आधारभूत संकल्पनाएँ, कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन, पिजिन, क्रियोल और मानक भाषा, भाषा अनुरक्षण एवं विस्थापन, भाषाद्वैत, द्विभाषिकता एवं बहुभाषिकता, भाषा-नियोजन और विकल्पन।

इकाई 3 : भाषा का सामाजिक परिप्रेक्ष्य : सामाजिक स्तर भेद और सामाजिक शैलियाँ, हिंदी भाषाई समाज का स्वरूप एवं क्षेत्र।

इकाई 4 : संप्रेषणपरक भाषा : हिंदी और अन्य भाषाओं में नाते-रिश्ते की शब्दावली, हिंदी में सर्वनाम और संबोधन शब्दावली।

संदर्भ ग्रंथ :

1. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, सहाय, रमानाथ (सं.), *हिंदी का सामाजिक संदर्भ*, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, 2000.
2. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, *भाषा का समाजशास्त्र*, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1995.
3. तिवारी, भोलानाथ, प्रियदर्शिनी मुकुल, *हिंदी भाषा की सामाजिक भूमिका*, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, 1987.
4. सिंह, राजेंद्र, प्रसाद, *भाषा का समाजशास्त्र*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004.
5. सिंह, राजेंद्र प्रसाद, *भारत में नाग परिवार की भाषाएँ*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
6. शर्मा, रामविलास, *भाषा और समाज*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2003.
7. अग्निहोत्री, रमाकांत एवं वंद्योपाध्याय, प्रणव कुमार भाषा, *बहुभाषिता और हिंदी*, शिलालेख प्रकाशन, दिल्ली, 2007.
8. अग्निहोत्री, रमाकांत, कुमार, संजय, *भाषा, बोली और समाज : एक अंत:संवाद,* देशकाल प्रकाशन, दिल्ली, 2001.
9. Trudgill, Peter, *Sociolinguistics: An Introduction to Language & Society*, Penguin Publishers, England, 1974.
10. Wardhaugh, Ronald, *An Introduction to Sociolinguistics*, Blackwell Publishers, Oxford, 1992.

C-4

कोशविज्ञान

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 557	**कोश विज्ञान**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

कोशविज्ञान अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान का महत्वपूर्ण व्यावहारिक पक्ष है। अतः इस पत्र का अभीष्ट कोशविज्ञान के सिद्धांत एवं व्यावहारिक पक्ष से विद्यार्थियों को अवगत कराना है।

इकाई 1 : कोशविज्ञान : कोश – अर्थ एवं परिभाषा, कोश के विविध नाम, कोश की उपयोगिता, कोश के प्रकार- शब्दकोश, विषय कोश एवं अन्य कोश, कोशविज्ञान का अन्य विषयों के साथ संबंध।

इकाई 2 : कोश-परंपरा : भारतीय कोश परंपरा (भारतीय भाषाओं के कोश), आभारतीय कोश परंपरा (विदेशी भाषा-हिन्दी भाषा कोश), हिन्दी कोश परंपरा एवं अन्य विषयगत कोश-परंपरा।

इकाई 3 : कोश निर्माण- प्रक्रिया : सामग्री संकलन, प्रविष्टि चयन, प्रविष्टि संरचना, प्रविष्टि-व्यवस्था। कोश निर्माण की समस्या।

इकाई 4 : शब्दकोश-अभ्यास : शब्दकोश को वर्ण-क्रम के अनुसार व्यवस्थित करना और पढ़ना।

संदर्भ ग्रंथ :

1. तिवारी,भोलानाथ, कोशविज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद ।
2. सिंह, रामआधार, कोशविज्ञान, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, मद्रास।
3. सं. वर्मा, रामचन्द्र, संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर, नागरी प्रचारिणी सभा,काशी ,1971 ।
4. शुक्ल,रमाशंकर, भाषा-शब्द-कोष, रामनरायनलाल बेनीप्रसाद, इलाहाबाद ,1977 ।
5. अग्रवाल,गिरिजाशरण और अग्रवाल,मीना, हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश, हिन्दी साहित्य निकेतन,1997 ।

C-5

लघु शोध-प्रबंध/परियोजनाकार्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 558	**लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य**	**00**	**00**	**06**	**00**	**06**

प्रस्तुत पत्र में निर्धारित पाठ्यक्रम के चारों पत्रों से संबंधित किसी एक विषय पर शिक्षक के निर्देशन में विद्यार्थी लघु शोध-प्रबंध/परियोजना कार्य प्रस्तुत करेंगे ।

SEMESTER-IV

वैकल्पिक पत्र : **(D)**

(Elective Paper)

तुलनात्मक साहित्य

तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन आधुनिक काल की आवश्यकता है। तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन से लेखकों के विचारों का कई भाषाओं में आदान-प्रदान हो जाता है, जिससे सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं भावात्मक एकता को बढ़ावा मिलता है। इस वैकल्पिक पत्र में तुलनात्मक साहित्य के स्वरूप और विकास पर ध्यान रखते हुए भारतीय साहित्य और पूर्वांचल के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। इस विकल्प के अंतर्गत चार पत्र रखे गए हैं।

D-1

तुलनात्मक साहित्य : स्वरूप, उद्भव और विकास

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 559	तुलनात्मक साहित्य:स्वरूप, उदभव और विकास	03	01	-	04	04

इकाई 1 :परिभाषा, स्वरूप, अवधारणा
तुलनात्मक साहित्य के तत्त्व।

इकाई 2 :तुलनात्मक साहित्य : उद्भव और विकास।
पाश्चात्य चिंतन परंपरा, भारतीय चिंतन परंपरा

इकाई 3 :तुलनात्मक साहित्य और विश्वसाहित्य।
पाश्चात्य साहित्य की विवेचना।
पाश्चात्य देशों में तुलनात्मक साहित्य अध्ययन।
भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य की तुलना।

इकाई 4 :तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद।
अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपीय साहित्य तथा एशिया के साहित्य का भारतीय भाषाओं में अनुवाद। भारतीय साहित्य का पारस्परिक अनुवाद।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नगेंद्र, *तुलनात्मक साहित्य*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2005.
2. चौधरी, इंद्रनाथ, *तुलनात्मक साहित्य की भूमिका*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1999.
3. नगेंद्र, *भारतीय साहित्य*, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1987.
4. चौधरी, इंद्रनाथ, *तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007.
5. बोरा, राजमल, *तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएँ*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. शर्मा, रामविलास, *भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
7. तिवारी, सियाराम, *भारतीय साहित्य की पहचान*, नालंदा, खुला विश्वविद्यालय, पटना.
8. Dev, Amiya,& Das, Sirir Kumar (Ed), *Comparative Literature : Theory and Practice*, Shinla.
9. Dev, Amiya, *The Idea of Comparative Literature in India*, Calcutta, 1989.

D-2

भारतीय साहित्य : अवधारणा और विशेषताएँ

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 560	**भारतीय साहित्य : अवधारणा और विशेषताएँ**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

इकाई 1 : भारतीय साहित्य : अवधारणा एवं महत्त्व

भारतीय साहित्य में भारतीयता, भारतीय साहित्य की एकरूपता, भारतीय साहित्य की विशेषताएँ।

इकाई 2 : भारतीय साहित्य की परंपरा :

संस्कृत साहित्य, प्राकृत साहित्य, अपभ्रंश साहित्य

इकाई 3 : आधुनिक भारतीय भाषाओं का साहित्य :

मुख्यत : हिंदी, बांग्ला, असमिया साहित्य।

इकाई 4 : भक्ति आंदोलन और भारतीय साहित्य।

भारतीय पुनर्जागरण और भारतीय साहित्य।

स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नगेंद्र, *तुलनात्मक साहित्य*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2005.
2. चौधरी, इंद्रनाथ, *तुलनात्मक साहित्य की भूमिका*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1999.
3. नगेंद्र, *भारतीय साहित्य*, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1987.
4. चौधरी, इंद्रनाथ, *तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007.
5. बोरा, राजमल, *तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएँ*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007.
6. शर्मा, रामविलास, *भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002.
7. तिवारी, सियाराम, *भारतीय साहित्य की पहचान*, नालंदा, खुला विश्वविद्यालय, पटना, 2009.
8. Joshi, Umashankar, *The Idea of Indian Literature*, Sahitya Akademi, New Delhi, 1990.
9. Dev, Amiya,& Das, Sirir Kumar (Ed), *Comparative Literature : Theory and Practice*, Shinla, 1998.
10. Dev, Amiya, *The Idea of Comparative Literature in India*, Calcutta, 1989.
11. Gifford, Hewy, *Comparative Literature*, London, 1969.

12. Majumdar, Swapan, *Comparative Literature : Indian Dimensions*, Calcutta, 1989.

D-3

पूर्वांचल की संस्कृति और साहित्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 561	**पूर्वोत्तर की संस्कृति और साहित्य**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

इकाई 1 : पूर्वांचल मुख्यत : उत्तरपूर्वी भारत की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक स्थिति, पूर्वांचल की भाषाएं एवं उनका साहित्य।

इकाई 2 : पूर्वांचल का साहित्य : परस्पर तुलना।

इकाई 3 : असमिया, बांग्ला और हिंदी साहित्य का तुलनात्मक परिचय।

इकाई 4 : हिंदी छायावादी काव्य एवं समकालीन असमिया एवं बांग्ला काव्य।
रवींद्रनाथ और हिंदी तथा असमिया काव्य पर उसका प्रभाव।
प्रेमचंद और विरिंचि कुमार बरुआ का कथासाहित्य।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नगेंद्र, *तुलनात्मक साहित्य*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2005.
2. चौधरी, इंद्रनाथ, *तुलनात्मक साहित्य की भूमिका*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1999.
3. नगेंद्र, *भारतीय साहित्य*, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1987.
4. चौधरी, इंद्रनाथ, *तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007.
5. बोरा, राजमल, *तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएँ*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007.
6. शर्मा, रामविलास, *भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002.
7. तिवारी, सियाराम, *भारतीय साहित्य की पहचान*, नालंदा, खुला विश्वविद्यालय, पटना, 2009.
8. Joshi, Umashankar, *The Idea of Indian Literature*, Sahitya Akademi, New Delhi, 1990.
9. Dev, Amiya,& Das, Sisir Kumar (Ed), *Comparative Literature : Theory and Practice*, Indian Institute of Advance Study, Shimla, 1989.
10. Dev, Amiya, *The Idea of Comparative Literature in India*, Papyrus, Calcutta, 1984.
11. Basnet, Susan, *Comparative Literature: A Critical Introduction*, Blackwell, 1993.
12. Majumdar, Swapan, *Comparative Literature : Indian Dimensions*, Papyrus, Calcutta, 1987.

D-4

असम की संस्कृति एवं साहित्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 562	असम की संस्कृति और साहित्य	03	01	-	04	04

प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को असम की संस्कृति एवं साहित्य से परिचित कराना है।

इकाई 1 : असम का भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं भाषिक परिचय।

इकाई 2 : असम का भक्ति साहित्य : विकास एवं परंपरा, प्रमुख कवि : शंकरदेव एवं माधवदेव का परिचय और भक्ति आंदोलन में इनका योगदान।

इकाई 3 : असम का कथा साहित्य : परिचय, परंपरा, प्रकार और असम के प्रमुख साहित्यकार- लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा और वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य।

इकाई 4 : असम के हिन्दी प्रचारक एवं हिन्दी प्रचार-संस्था।

संदर्भ ग्रंथ :

1. मागध, कृष्णदेव प्रसाद, महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली।
2. महंत,चित्र, असमिया साहित्य और साहित्यकार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,1970।
3. मागध, कृष्णदेव प्रसाद, असम प्रांतीय हिन्दी साहित्य।
4. मागध, कृष्णदेव प्रसाद, शंकरदेव : साहित्यकार एवं विचारक, असम राष्ट्रभाषा सेवक संघ,गुवाहाटी, 1975।
5. झा, ताराकान्त, महापुरुष शंकरदेव और असम का सत्र संस्थान।
6. नारायण कमलदेव, असमिया साहित्य का इतिहास (अनूदित)।
7. पाठक, हरेराम, पूर्वाञ्चलीय राज्यों के साहित्यकार का हिन्दी को योगदान, गोपिका प्रकाशन, लखनऊ,2009।

D-5

लघु शोध-प्रबंध/परियोजनाकार्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 563	लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य	00	00	06	00	06

प्रस्तुत पत्र में निर्धारित पाठ्यक्रम के चारों पत्रों से संबंधित किसी एक विषय पर शिक्षक के निर्देशन में विद्यार्थी लघु शोध-प्रबंध/परियोजना कार्य प्रस्तुत करेंगे।

SEMESTER-IV

वैकल्पिक पत्र : **(E)**

(Elective Paper)

लोकसाहित्य

लोकसाहित्य एक जीवित और विकासोन्मुख विषय है। इसका निवास लोककंठ में है। पृथ्वी की विशालता की भाँति हमारे चारों ओर विस्तृत लोक का ज्ञान भी अपरिमित है। इसके अध्ययन के अभाव में किसी देश की सभ्यता-संस्कृति, धर्म-नीति, रीति-रिवाज़, कला-साहित्य, सामाजिक अभ्युदय और आकांक्षाओं का सूक्ष्म अवलोकन नहीं किया जा सकता। इसके अंतर्गत जनसाधारण का परंपरागत ज्ञान, उसके आनंद-उत्सव उसके अपरिपक्व मन की परिकल्पना आदि का समावेश है। आज इसके अध्ययन व शोध की प्रासंगिकता महत्त्वपूर्ण है। अतः लोकसाहित्य और उसके सभी अनुषंगों के सिद्धांत और व्यवहार-पक्ष का अध्ययन-विश्लेषण प्रस्तुत-पत्र का अभीष्ट है। इस विकल्प के अंतर्गत चार पत्र रखे गए हैं।

E-1

लोकसाहित्य : सिद्धांत-संदर्भ

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 564	लोक साहित्य : सिद्धांत-संदर्भ	03	01	-	04	04

प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य लोकसाहित्य के सिद्धांत-पक्ष से विद्यार्थियों को अवगत कराना है।

इकाई 1 : लोक : अर्थ एवं परिभाषा, उत्पत्ति, परंपरा(प्राचीन और आधुनिक), लोक और शास्त्र, लोक-तत्व ।

इकाई 2 : लोकवार्ता : फोकलोर- अर्थ एवं परिभाषा, लोकवार्ता : विषय-वस्तु, परिभाषा, क्षेत्र, वर्गीकरण, संप्रदाय, अध्ययन की पद्धतियाँ।

इकाई 3 : लोकसाहित्य : उद्भव एवं विकास, अर्थ एवं परिभाषा, क्षेत्र एवं विशेषताएँ, भेद एवं वर्गीकरण ।

इकाई 4 : लोक साहित्य के अध्ययन की परंपरा एवं दिशाएँ, लोक साहित्य की मर्यादा, लोक साहित्य का महत्त्व, लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य।

संदर्भ ग्रंथ :

1. उपाध्याय, कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन,इलाहाबाद,
2. मिश्र, विद्यानिवास, लोक और शास्त्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. मिश्र, विद्यानिवास, चन्दन चौक की भूमिका, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
4. उत्प्रेती, डॉ. कुंदनलाल, लोकसाहित्य के प्रतिमान, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़।
5. दुबे, डॉ.सत्यनारायण 'शरतेन्दु', लोक-साहित्य की रूपरेखा, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. शर्मा, श्रीराम, लोकसाहित्य : संदर्भ और दिशाएँ, हिन्दी बुक सेंटर,दिल्ली,2001 ।
7. दुबे,श्यामसुंदर, लोक परंपरा : पहचान एवं प्रवाह, राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली,2003।

E-2

लोकगीत एवं लोकगाथा

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 565	लोकगीत और लोकगाथा	03	01	-	04	04

प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को लोकगीत और लोकगाथा के स्वरूप और हिन्दी के लोकगीतों और लोकगाथाओं की जानकारी देना है ।

इकाई 1 : लोकगीत : स्वरूप, परिभाषा, परंपरा, महत्त्व, लक्षण एवं वर्गीकरण, लोकगीतों का शिल्प ।

इकाई 2 : लोकगाथा : उत्पत्ति, परिभाषा, प्रकार एवं विश्लेषण ।

इकाई 3 : हिन्दी के लोकगीत : परिचय, प्रकृति एवं शिल्प ।

इकाई 4 : हिन्दी की लोकगाथा : परिचय, प्रकृति एवं शिल्प ।

संदर्भ ग्रंथ :

3. उपाध्याय, कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन,इलाहाबाद.
4. मिश्र, विद्यानिवास, लोक और शास्त्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
5. मिश्र, विद्यानिवास, चन्दन चौक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
6. उत्प्रेती, डॉ. कुंदनलाल, लोकसाहित्य के प्रतिमान, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़।
7. दुबे, डॉ.सत्यनारायण 'शरतेन्दु', लोक-साहित्य की रूपरेखा, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
8. शर्मा, श्रीराम, लोकसाहित्य : संदर्भ और दिशाएँ, हिन्दी बुक सेंटर,दिल्ली,2001 ।
9. त्रिपाठी, उमाकांत, ,एक आम हरियर के आम पीयर
10. दुबे,श्यामसुंदर, लोक परंपरा : पहचान एवं प्रवाह, राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली,2003।

11. जैन, शांति : लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1989।
12. मिश्र, विद्यानिवास, वाचिक कविता : भोजपुरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

E-3

लोककथा एवं लोक नाटक

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 566	**लोक कथा एवं लोक नाटक**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को लोककथा और लोक नाटक की प्रकृति और हिन्दी की लोककथाओं और लोकनाटकों से अवगत कराना है।

इकाई 1 : लोककथा : उद्भव, स्वरूप, परिभाषा, विशेषता एवं वर्गीकरण।

इकाई 2 : लोक नाटक : उत्पत्ति, परिभाषा, प्रकार एवं विश्लेषण।

इकाई 3 : हिन्दी की लोककथा : परिचय, प्रकृति एवं शिल्प।

इकाई 4 : हिन्दी की लोकगाथा : परिचय, प्रकृति एवं शिल्प।

संदर्भ ग्रंथ :

1. उपाध्याय, कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन,इलाहाबाद .
2. मिश्र, विद्यानिवास, लोक और लोक का स्वर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. मिश्र, विद्यानिवास, लोक और शास्त्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
4. मिश्र, विद्यानिवास, चन्दन चौक की भूमिका, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
5. उत्प्रेती, डॉ. कुंदनलाल, लोकसाहित्य के प्रतिमान, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़।
6. दुबे, डॉ.सत्यनारायण 'शरतेन्दु', लोक-साहित्य की रूपरेखा, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. शर्मा, श्रीराम, लोकसाहित्य : संदर्भ और दिशाएँ, हिन्दी बुक सेंटर,दिल्ली,2001।
8. त्रिपाठी, उमाकांत, ,एक आम हरियर के आम पीयर,
9. संगीता, लोककथा कोश, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1990।
10. दुबे,श्यामसुंदर, लोक परंपरा : पहचान एवं प्रवाह, राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली,2003।
11. जैन, शांति : लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1989।

12. मिश्र, विद्यानिवास, वाचिक कविता : भोजपुरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

E-3

लोकसुभाषित

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 567	लोक सुभाषित	03	01	-	04	04

प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को लोक सुभाषित की प्रकृति के साथ-साथ से परिचित कराना है। इसके साथ ही हिन्दी की जानकारी भी देना है ।

इकाई 1 : लोकोक्तियाँ : उद्भव, स्वरूप, परिभाषा, विशेषता एवं वर्गीकरण।

इकाई 2 : मुहावरे : अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य, विशेषता, प्रकार एवं लोकोक्ति और मुहावरा में अंतर ।

इकाई 3 : पहेलियाँ : अर्थ, उत्पत्ति, परंपरा एवं प्रकार ।

इकाई 4 : हिन्दी की लोकोक्तियाँ, मुहावरे एवं पहेलियाँ : परिचय, प्रकृति एवं शिल्प ।

संदर्भ ग्रंथ :

1. उपाध्याय, कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन,इलाहाबाद .
2. मिश्र, विद्यानिवास, लोक और शास्त्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. मिश्र, विद्यानिवास, चन्दन चौक की भूमिका, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
4. उत्प्रेती, डॉ. कुंदनलाल, लोकसाहित्य के प्रतिमान, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़।
5. दुबे, डॉ.सत्यनारायण 'शरतेन्दु', लोक-साहित्य की रूपरेखा, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. शर्मा, श्रीराम, लोकसाहित्य : संदर्भ और दिशाएँ, हिन्दी बुक सेंटर,दिल्ली,2001 ।
7. त्रिपाठी, उमाकांत, ,एक आम हरियर के आम पीयर,
8. संगीता, लोककथा कोश, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1990।
9. दुबे,श्यामसुंदर, लोक परंपरा : पहचान एवं प्रवाह, राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली,2003।
10. जैन, शांति : लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1989।
11. मिश्र, विद्यानिवास, वाचिक कविता : भोजपुरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

E-5

लघु शोध-प्रबंध/परियोजनाकार्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 568	लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य	00	00	06	00	06

प्रस्तुत पत्र में निर्धारित पाठ्यक्रम के चारों पत्रों से संबंधित किसी एक विषय पर शिक्षक के निर्देशन में विद्यार्थी लघु शोध-प्रबंध/परियोजना कार्य प्रस्तुत करेंगे।

SEMESTER-IV

वैकल्पिक पत्र : **(G)**

(Elective Paper)

सिनेमा, साहित्य और समाज

इस वैकल्पिक पत्र के अंतर्गत सिनेमा, साहित्य और समाज के अंतःसंबंधों का अध्ययन अपेक्षित है| वर्तमान समय में सिनेमा को साहित्य का ही एक अंग मानकर इसे 'सेल्युलाइड साहित्य' की संज्ञा दी जा रही है| सिनेमा और साहित्य दोनों ही अपने समय और समाज के उत्पाद भी होते हैं और उसके प्रस्तोता भी| यह अलग बात है कि विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक या अन्य समस्याओं की अभिव्यक्ति का तरीका दोनों में अलग-अलग होता है| साहित्य में जहाँ केवल भाषा के माध्यम से भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त किया जाता है वहीं सिनेमा में भाषा और तकनीक दोनों का प्रयोग करते हुए दृश्य-श्रव्य रूप में कथ्य को अभिव्यक्त किया जाता है| प्रस्तुत पत्र में विद्यार्थियों को साहित्य और सिनेमा के अंतःसंबंधों से परिचित कराते हुए दोनों माध्यमों की प्रस्तुतिपरक पार्थक्य से भी अवगत कराया जाएगा साथ ही सिनेमा के माध्यम से विभिन्न अस्मितामूलक विमर्शों की प्रस्तुति पर भी चर्चा की जाएगी| इस विकल्प के अंतर्गत चार पत्र रखे गए हैं।

G-1

सिनेमा, साहित्य और समाज का अंतःसंबंध

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 574	सिनेमा, साहित्य और समाज का अन्तः संबंध	03	01	-	04	04

प्रस्तुत पत्र के अंतर्गत मुख्य रूप से सिनेमा, साहित्य और समाज के अंतःसंबंधों का अध्ययन अपेक्षित है। इस पत्र में हिंदी सिनेमा के उद्भव और विकास पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। साथ ही विद्यार्थियों को सिनेमा और साहित्य की संवेदना तथा तकनीक, सिनेमा पर साहित्य और समाज का प्रभाव तथा सिनेमा का सामाजिक सरोकार, बदलते हुए युग-परिवेश का सिनेमा में चित्रण आदि पहलुओं से अवगत कराया जाएगा ताकि विद्यार्थी सिनेमा, साहित्य और समाज के अंतःसंबंधों को गहराई से समझ सकें।

इकाई 1 : हिंदी सिनेमा का उद्भव एवं विकास, सिनेमा के विभिन्न रूप(व्यावसायिक, कला, वृत्त चित्र)
इकाई 2 : सिनेमा और साहित्य की संवेदना तथा तकनीक
इकाई 3 : सिनेमा पर साहित्य और समाज का प्रभाव
इकाई 4 : सिनेमा का सामाजिक सरोकार, बदलते हुए युग-परिवेश का सिनेमा में चित्रण

संदर्भ ग्रंथ :

1. भारद्वाज, विनोद(1994). *समय और सिनेमा*. प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
2. भारद्वाज, विनोद(1985). *नया सिनेमा*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
3. तिवारी, सुरेन्द्र नाथ(1996). *भारतीय नया सिनेमा*. अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
4. पचौरी, सुधीश(1996). *मीडिया और साहित्य*. राजसूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
5. जमाल, अनवर एवं चटर्जी, सैबल(2006*). हॉलीवुड बॉलीवुड*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
6. कुमार, हरीश, *सिनेमा और साहित्य*, संजय प्रकाशन, प्रगतिविहार, नई दिल्ली, 1998.
7. Throaval, Yues, *The Cinemas of India*, I.B. Tauris & Co. Ltd. (London)2005.

G-2

साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 575	साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण	03	01	-	04	04

इस पत्र में विद्यार्थियों को एक विधा के रूप में साहित्य और सिनेमा के बीच मौजूद साम्य-वैषम्य से अवगत कराया जाएगा। दोनों विधाओं में विषय-वस्तु, शिल्प एवं प्रस्तुति के स्तर जो अलगाव है उसकी जानकारी दी जाएगी। प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों पर निर्मित फिल्मों के विभिन्न पहलुओं का तकनीक एवं संवेदना के स्तर पर अध्ययन-विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही साहित्य के सिनेमाई रूपान्तरण की परंपरा से भी अवगत कराया जाएगा।

इकाई 1 : साहित्य और सिनेमा में विधात्मक साम्य-वैषम्य, दोनों में विषय-वस्तु शिल्प-विधान,प्रस्तुति के स्तर पर अंतर

इकाई 2 : साहित्य के सिनेमाई रूपांतरण की परंपरा

इकाई 3: हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों पर निर्मित हिंदी फिल्में-गबन, सद्गति, आँधी, पद्मावती, रजनीगंधा, परिणीता, मुहल्ला अस्सी

इकाई 4 : अँग्रेजी की प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों पर निर्मित हिंदी फिल्में- ओंकारा, हैदर, मक़बूल, हाफ गर्लफ्रेंड, थ्री इडियट्स, टू स्टेट्स

संदर्भ ग्रंथ :

1. महेंद्र, मित्तल(1975). *भारतीय चलचित्र का इतिहास*. सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
2. चड्ढा, मनमोहन(1990). *हिंदी सिनेमा का इतिहास*. सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
3. रे, सत्यजित(2007). *विषय चलचित्र*. रेमाधव पब्लिकेशन्स, नोएडा, प्रथम संस्करण.
4. ब्रह्मात्मज, अजय(2012). *सिनेमा समकालीन सिनेमा*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
5. अग्रवाल, विजय, *सिनेमा की संवेदना*, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1994.
6. खरे, विष्णु, *सिनेमा पढ़ने के तरीके*, प्रवीन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.
7. तिवारी, प्रदीप, *सिनेमा के शिखर*, संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2006.

G-3

हिंदी सिनेमा और अस्मिता मूलक विमर्श

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 576	हिन्दी सिनेमा और अस्मितामूलक विमर्श	03	01	-	04	04

प्रस्तुत पत्र में विद्यार्थियों को हाशिये के समाज से संबंधित प्रमुख विमर्शों से परिचित कराया जाएगा तथा हिंदी सिनेमा में समाज के उपेक्षित वर्ग को, उनकी समस्याओं को किस तरह से दर्शाया जा रहा है, समाज पर उनका क्या असर हो रहा है आदि मुद्दों से अवगत कराया जाएगा।पत्र में सिनेमा के माध्यम से विभिन्न अस्मिताओं के संदर्भ में लोगों की संवेदना को जगारित करने के प्रयासों पर भी चर्चा होगी। इस क्रम में दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, स्त्री तथा किन्नर विमर्श पर केंद्रित फिल्मों पर विचार-विमर्श किया जाएगा।

इकाई 1 : अस्मिता मूलक विमर्श: एक परिचय (दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, किन्नर, स्त्री विमर्श)

इकाई 2 : हिंदी सिनेमा और दलित-आदिवासी विमर्श

इकाई 3 : हिंदी सिनेमा में अल्पसंख्यक और स्त्री विमर्श

इकाई 4 : हिंदी सिनेमा और किन्नर विमर्श

संदर्भ ग्रंथ :

1. लिंबाले, शरणकुमार, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. सिंह,राजेंद्र प्रसाद, हिन्दी का अस्मितामूलक साहित्य और अस्मिताकार, अमन प्रकाशन, कानपुर,2016.
3. ओझा, अनुपम, *भारतीय सिने-सिद्धांत*, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2002.
4. मदान, ब्रजेश्वर, *सिनेमा नया सिनेमा*, पुस्तकायन, दिल्ली, 1990.
5. मिश्र, महेंद्र, *सत्यजीत राय पथेर पांचाली और फिल्म जगत*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
6. सिन्हा, प्रसून, *भारतीय सिनेमा....एक अनंत यात्रा*, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
7. दास, विनोद, *भारतीय सिनेमा का अंतःकरण*, मेधा बुक्स शाहदरा, दिल्ली, 2003.

G-4

साहित्य और सिनेमा का भाषाई एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 577	**साहित्य और सिनेमा का भाषाई एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य**	**03**	**01**	**-**	**04**	**04**

यह पत्र साहित्य और सिनेमा के भाषाई-सामाजिक परिप्रेक्ष्य पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत भाषा और समाज को ध्यान में रखते हुए सिनेमा तथा साहित्य की संवेदना, संवाद तथा संगीत की भाषा का अध्ययन-विश्लेषण किया जाएगा। इस क्रम में समाजभाषाविज्ञान के प्रमुख उपकरणों का भी उपयोग किया जाएगा। इसमें विद्यार्थियों को भाषा और समाज के विकास में सिनेमा तथा साहित्य के योगदान से भी अवगत कराया जाएगा।

इकाई 1 : साहित्य और सिनेमा में भाषा तथा समाज, विभिन्न समाजभाषिक अवधारणाएं तथा संकल्पनाएँ

इकाई 2 : भाषा और समाज के विकास में साहित्य का योगदान

इकाई 3 : भाषा और समाज के विकास में सिनेमा का योगदान

इकाई 4 : सिनेमा के संवाद और संगीत की भाषा, सिनेमा की भाषा का बदलता स्वरूप

इकाई 5 : साहित्य की भाषा का बदलता स्वरूप

संदर्भ ग्रंथ :

1. वासानी, किशोर, *सिनेमाई भाषा और हिंदी संवादी विश्लेषण*, हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली, 1998.
2. पारख, जवरीमल्ल, *हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र*, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2006.
3. शर्मा, गोविन्द, *हिंदी सिनेमा पटकथा लेखन*, परिदृश्य प्रकाशन, मुंबई, 2003.
4. गुप्ता, चिदानंद दास, *सत्यजीत राय का सिनेमा*,(अनु०- अवध नारायण मुद्गल), नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया.
5. अग्रवाल, विजय, *आज का सिनेमा*, नीलकंठ प्रकाशन लिमिटेड, महरौली, 2001.
6. मित्तल, डॉ० महेंद्र, *भारतीय चलचित्र*, अलंकार प्रकाशन, दिल्ली, 1975.
7. तिवारी, सुरेन्द्रनाथ, *भारतीय नया सिनेमा*, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 1998.
8. Ray, Satyajit, *Our films their films*, Orient longman Ltd., New Delhi, 1976.
9. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, हिंदी भाषा का समाजशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1994
10. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ एवं सहाय, रमानाथ, हिंदी का सामाजिक संदर्भ, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

G-5

लघु शोध-प्रबंध/परियोजनाकार्य

Course Code	Course Name	L	T	P	CH	CR
HN 578	**लघु शोध-प्रबंध / परियोजना कार्य**	**00**	**00**	**06**	**00**	**06**

प्रस्तुत पत्र में निर्धारित पाठ्यक्रम के चारों पत्रों से संबंधित किसी एक विषय पर शिक्षक के निर्देशन में विद्यार्थी लघु शोध-प्रबंध/परियोजना कार्य प्रस्तुत करेंगे।